

गन्तव्य

(विविध भावों पर आधारित कविताओं का संकलन)

सम्पादक :

परमात्मा स्वरूप 'भारती'

सम्पादन सहयोग :

जटाशंकर 'प्रियदर्शी'
विजय कुमार 'बालेन्दु'
सुरेन्द्र प्रताप सिंह

परामर्श :

लाल जी तिवारी 'लाल'
मनोज कुमार सिंह

प्रकाशक
अखिल भारतीय साहित्य-कला-मंच
प्रयागीय शाखा
डी/14, गंगा-विहार कालोनी,
तोपखाना बाजार के समीप
न्यू कैन्ट इलाहाबाद

संस्करण - प्रथम
बसंत पंचमी सं0 2059

© कापीराइट प्रकाशकाधीन

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच
प्रयागीय शाखा के लिए
प्रयाग पेपर एण्ड प्रिन्टर्स
रसूलाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित
फोन : (0532) 2545004

लेजर कम्पोजिंग
अनिल प्रिंटिंग प्रेस
कचेहरी रोड, इलाहाबाद
दूरभाष : 641912

मूल्य : 100 रुपये मात्र

सम्पादकीय

प्रथम पग, पृथ्वी पर रखना, यदि गति प्राप्ति के लिए अनिवार्य है तो उसी क्षण उस प्रथम पग का 'गंतव्य' भी निश्चय ही अपरिहार्य है। गन्तव्य, लक्ष्य अन्तिम नही। एक प्राप्त होता है तो दूजे का आकलन मन के किसी अन्तर्निहित भाग मे उसी पल हो जाता है। यही जीवन है–यही जीवन का लक्ष्य है, क्योकि–

मंजिलों की बात क्या है मंजिलें मंज़िल नहीं
डरता क्यो है मुश्किलो से, मुश्किलें मुश्किल नहीं,
जिन्दगी को बस जरा ज़िन्दादिली से जी के देख
रास्तों पर चलने वाले मंज़िलें गाफिल नहीं।

–स्वरूप भारती

इसी उद्देश्य को लेकर इस सकलन की रूप-रेखा बनी। कविता स्वय मे प्रवाह है मंदाकिनी की भाँति। लय, छन्द बद्ध गुनगुनाते हुए आगे बढ़ती है-निरन्तर हर अवचेतन को चेतनता का आभास कराते हुए। अभिव्यक्ति के अनेक माध्यमों के बीच कविता मे निहित भाव हृदयग्राही होते हैं। वस्तुतः जागृत रहने की, गतिमान रहने की-इसी विशद् भावना की परिणति 'गन्तव्य' के रूप में हुई।

यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि विषय और काव्य विधा के सम्बन्ध मे सभी प्रतिभागी कृतिकारों को अपनी इच्छानुसार विषय-वस्तु चुनने की स्वतन्त्रता दी गयी है। तदनुसार सहृदय कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से विविध विषयों को चुना। 'गन्तव्य' (सकलन) के माध्यम से पाठकों के समक्ष तीन पीढ़ियों की रचनाओ का प्रस्तुतीकरण, यथा–वरिष्ठ, स्थापित एव नवोदित रूप मे किया गया है–जो आज के भौतिकवादी युग में सास्कृतिक समन्वय का एक पुल-सा प्रतीत होता है। प्रस्तुत संकलन में कुल 46 कवियों का संयोजन जन्म-तिथि के अनुक्रम में किया गया है।

अखिल भारतीय साहित्य-कला-मच (प्रयागीय शाखा) ने अपना कर्तव्य पथ, करणीय दिशा निर्धारित कर दृढ इच्छाशक्ति से इस प्रथम प्रयास को सहेजा एव मूर्तरूप दिया। वस्तुत. यह तो केवल लघु प्रयास मात्र हैं, जिसमें सग्रहीत रचनाओ मे रचनाकारों ने जनाकाक्षाओ को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। इस संकलन का मुख्य उद्देश्य तरुण रचनाकारो को अधिक संख्या में साथ लेकर चलना रहा जो किसी कारण कहीं प्रकाशित न हो सके–साहित्याकाश की छांव से वंचित रहे। हिन्दी काव्य जगत् के प्रख्यात हस्ताक्षरों का साथ, युवा पीढ़ी के लिए, उत्साह वर्धन हेतु आशीर्वचन सा रहा है। अनन्ताकाश के प्रकाश स्तम्भ सूर्य के तेज के समान कविता-कामिनी की रचना मे भी यह तेज परिलक्षित हो–यही भावना इस संकलन का केन्द्र बिंदु है।

अखिल भारतीय साहित्य-कला मच (प्रयागीय शाखा) के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य उपकृत हैं उन सभी कृतिकारो के, जिनकी आत्मीयता ही इस संकलन के प्रणयन का आधार

बनी। इस संकलन में कई ऐसे रचनाकार भी सम्मिलित हैं, जिन पर शोध हो चुका है, कई ऐसे हैं जिन पर विश्वविद्यालयों में शोध कार्य प्रगति पर है। अधिकांश ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने अल्प रचनाकाल में अपनी पहचान बनाई है और अनेक सम्भावनाओं को इंगित किया है। [illegible] पूर्वाग्रह के सभी रचनाकारों को माँ भारती की अर्चना हेतु प्रस्तुत संकलन में समाविष्ट किया गया है।

साहित्य की अनेक विधाओं में काव्य ही एक ऐसी अद्भुत विधा है जो–

सतसइया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर।।

अर्थात् जो कुछ कहना या समझाना होता है, कम में समझा जा सकता है। यही काव्य ो विलक्षणता है। ऐसा ही कहीं-कहीं इस संकलन में कतिपय रचनाकारों ने अपनी लेखनी के ध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'हम तुम मिलें तो मनुष्यता प्रपूर्ण हो,
पंथी जो अकेला उसे कोस-कोस कड़ा है।'

–श्री [illegible] अवस्थी

'मोक्ष प्रदा, शुभदा वरदायिनि देवापगा बन जाती है गंगा।
बिन्दु से बिन्दु मिलाती हुई फिर सिन्धुवती बन जाती है गंगा।।'

–डॉ. रामाश्रय 'सविता'

'अग्नि जली अन्तर में फिर भी जला नहीं मकरन्द'

–डॉ. किशोरी रमण शर्मा

'जलनिधि में रहकर भी मैंने अपनी अमिट पिपासा पाली।
कूप, सरोवर, नदिया भटका पर गागर खाली की खाली।।'

–श्री वीरेन्द्र प्रकाश 'अंशुमाली'

या फिर वर्तमान व्यवस्था पर तीक्ष्ण प्रहार स्वरूप
जन सेवक कुबेर बन जाते राज कोष को करके खाली'

–श्रीमती कमलेश श्रीवास्तव

अन्ततः सहभागिता, सहकारिता में ही उन्नति एवं अभ्युदय है–
सहकारी अस्तित्व जहाँ है वहीं अभ्युदय हो पाता है।

–जटाशंकर 'प्रियदर्शी'

इस कृति के सृजन, सम्पादन काल में समय-समय पर जिन महानुभावों का सहयोग एवं र्श मुझे प्राप्त हुआ है, उनके प्रति मैं व्यक्तिगत रूप से आभारी हूँ। विशेषतया अग्रज श्री र प्रकाश 'अंशुमाली' जी का मैं ऋणी तो नहीं कहूँगा, क्योंकि अनुज स्नेह-भाजन का पात्र

ोता है और वह स्नेह उन्होने मुझे सहयोग के रूप मे दिया। बन्धुवर श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के समय-समय पर दिये गये परामर्श का यथोचित अशदान इस सकलन के रूप मे जो उदय हुआ है, उसके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। आभारी हूँ मैं अपनी प्रयागीय शाखा के ाध्यक्ष श्री जटाशकर 'प्रियदर्शी' का, जिनके सतत् प्रयत्न, अथाह लगन के कारण अधिकांश कवियो की संक्षिप्त साहित्यिक समीक्षा, परिचय के नीचे देना सभव हो सकी। यहाँ मै यदि अपनी प्रयागीय शाखा के कर्मठ एवं उत्साही महासचिव श्री विजय कुमार 'बालेन्दु' के अथक सहयोग, अनवरत भाग-दौड़ को न याद करूँ या उनका सस्था के प्रति, अपने प्रति आभार न स्वीकारूँ तो कृतघ्नता होगी। आर्थिक व्यवस्था हेतु मैं सस्था के कोषाध्यक्ष श्री एस0 पी0 सिंह का आभारी हूँ।

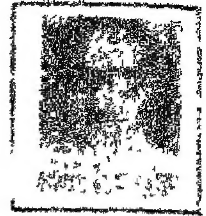
अन्ततोगत्वा सहयोगी कवियो एवं पाठको से कहना चाहूँगा कि प्रस्तुत सकलन को पूरी लगन एव निष्ठा से आकृति देने की चेष्टा की गयी है, फिर भी कही कोई मुद्रण सम्बन्धी त्रुटि हुई हो तो उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ। आशा ही नही, अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक गण अपने विवेकपूर्ण अभिमत से संस्था को अवगत करायेंगे।

बसन्तपंचमी, सं0 2059
प्रयाग

परमात्मा स्वरूप 'भारती

अनुक्रमणिका

जीवन परिचय



नाम	राम प्रसाद 'अटल'
जन्म	1-1-1923
शिक्षा	साहित्य विशारद (प्रयाग से) बी0 ए0, बी0 टी0 एम0 (नागपुर से)
साहित्य सृजन	पहली कविता 1937 (कक्षा 6 से) फिर अनेकों पत्र पत्रिकाओं में भागीदारी, कविता कहानी, लेख एवं नाटक प्रत्येक विधा में सृजन।
प्रकाशन	एक कहानी संग्रह, एक कविता संग्रह तीन नाटक एवं अनेकों संकलनों में रचनायें
जीवन यापन	भारत की सुरक्षा सामग्री की छः निर्माणियों में कार्यरत रहकर 40 वर्ष की सेवा के बाद अधिकारी पद से जुलाई, 1984 में अवकाश प्राप्त;
मान/सम्मान	भारत के कई प्रान्तों की साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मान प्राप्त
संप्रति	स्वतंत्र लेखन, पेन्शन भोगी
सपर्क	हर्षालय, पुरानी बस्ती राँझी, जबलपुर, म0 प्र0 फोन-0761-2334875, 2332142, 482005

छुप छुपकर

जाने कौन छुप छुप के, सपनो मे मेरे आ जाना है।

जाते जाते पहलू में, तकिया मेरे रख जाता है ।। 1 ।।

कभी पकड़ हाथ, दो कदम साथ ।

कभी छेड़ छाड फिर छोड़ हाथ ।।

जाकर दूर, बहुत मजबूर, कर कर वो तड़पाता है ।। 2 ।।

सारी सारी रात भगाता है ।

खिल खिल कर खिल जाता है ।।

रंगीला है, गर्वीला है, पर फिर भी शर्माता है ।। 3 ।।

चाहा हमने कुछ प्यार करे ।

अधरो से रूप श्रृंगार करें ।।

बिजली सा चमक, कुछ गया बहक, देखा तो बहुत घबराता है ।। 4 ।।

नादान हसीं और शर्मशार ।

डरता इज़हार करे क्यों प्यार ।।

दुनिया की नज़र का उसको डर, इससे छुप छुप कर आता है ।। 5 ।।



अंगड़ाई मौसम की

कल फिर से कुछ, याद तुम्हारी आई थी।
भूल गये थे पर मौसम ने, ऐसी ली अंगड़ाई थी।। 1 ।।

रिम झिम मस्त फुहार पड़ी, मिटी तपन धरती की बड़ी।
थिरक उठे सारे तरुवर, मस्त चली पुरवाई थी।। 2 ।।

ये रास धरा का, मतवाले देखें न उसे ऊपर वाले।
ढक गया गगन धीरे-धीरे, काली छटा फिर छाई थी।। 3 ।।

आतुर था आकाश बड़ा, बादल बदली में झगड़ा।
कड़क कड़क लिपटा चिपटी, आपस में हुई लड़ाई थी।। 4 ।।

दिखे सभी बदले बदले, इसी से फिर हम भी सँभले।
याद बुलाओ, ख़ुद आ जाओ, याद बड़ी तड़पाई थी।। 5 ।।



कवि-परिचय

डॉ0 मोहन अवस्थी

20 जनवरी, सन् 1929 ई0

पिपर गाँव, जिला-फर्रुखाबाद

डी0 फिल, डी0 लिट्

8/4, बैंक रोड, इलाहाबाद

(1) अखिल भारतीय हिन्दी सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा महारथी' उपाधि (1972)

(2) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'साहित्य सारस्वत (1994)

(3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'विद्या वाचस्पति (1966)

(4) अरुणिमा संस्था इलाहाबाद द्वारा 'साहित्य सुधाकर' उपाधि

(5) अभिषेक श्री संस्था इलाहाबाद द्वारा 'अभिषेक श्री' सम्मान

(6) प0 देवी दत्त शुक्ल शोध संस्थान, इलाहाबाद द्वारा सेवार्थ' सम्मान (1995)

(7) उ0 प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'बाल कृष्ण शर्म सम्मान (1997)

(8) उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण' सम्मान (

(9) 'ब्रजभाषा साहित्य साधना' सम्मान समारोह के तत्वा महामहिम राज्यपाल उ0 प्र0 द्वारा हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान (2001)

(10) अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान द्वारा साहित्य उपाधि देकर सम्मान (2002)

डॉ0 मोहन अवस्थी हिन्दी काव्य-जगत के प्रख्यात हस्ताक्षर अपनी शैली के कारण उन्होने अपनी अलग पहचान बनाई है। के प्रवर्तन का श्रेय उन्हें है और उन्होंने हिन्दी कविता को नई तथा भाषा का नया तेवर दिया है। उनकी लगभग तीस पुस्तकें- की प्रकाशित हो चुकी है।

अनुगीत

हम तुम मिले तो मनुष्यता प्रपूर्ण हो, पंथी जो अकेला उसे कोस कोस कड़ा है
प्रश्न न हुआ है हल, कभी हल होगा नहीं, कौन कब छोटा और कौन कब बड़ा है

आँख मूँद दौड़ने में अवकाश था ही किसे, पुरस्कार मिली आज, मुड़ न देखा तो
लोकमान्यता मे पर-पीड़न का अहसास, पत्थर की छाती पर पंगत सा गड़ा है-
हम तुम मिलें तो मनुष्यता प्रपूर्ण हो, पंथी जो अकेला उसे कोस कोस कड़ा है

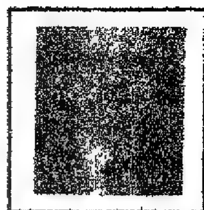
छत चढ़ा बालक, "निमित्त मैं हूँ," सीढ़ी कहे, बच्चा कहे, ' तुझे मेरे बाप ने बनाया है'
मूढ़मतियों को भला धरती जवाब क्या दे, हर एक अपनी ज़मीन पर खड़ा है
प्रश्न न हुआ है हल, कभी हल होगा नहीं, कौन कब छोटा और कौन कब बड़ा है

क्रम हीन खेल की व्यवस्थित विचित्रता है, उम्र नाप तौल चेतना पचाए ये कहीं
वृक्ष पिता मेरा पाए जीवन का नया रस', बस यह सोचकर पत्ता-पत्ता झड़ा है
प्रश्न न हुआ है हल, कभी हल होगा नहीं, कौन कब छोटा और कौन कब बड़ा है

सृजन-विकास नाम है बस समन्वय का, भावना के स्फुरण की शैलियाँ विभिन्न हैं
आगे पाँच,, पीछे दस चले पगडंडी बनी, फैलकर सैकड़ों चले तो पथ बड़ा है
हम तुम मिले तो मनुष्यता प्रपूर्ण हो, पंथी जो अकेला उसे कोस कोस कड़ा है

एक का सहारा दूसरा है, यही ज़िन्दगी है, उच्च और निम्न का सवाल कहाँ उठता
सत्य है कि कीचड में उगता कमल, किन्तु, कीचड़ में बीज तो कमल का ही पड़ा है
हम तुम मिले तो मनुष्यता प्रपूर्ण हो, पंथी जो अकेला उस कोस-कोस कड़ा है

कवि परिचय



डा0 रामाश्रय 'सविता'
स्व0 श्रीमती कुन्दनाली
स्व0 श्री छोटे लाल
ग्राम व डाकघर, मखौली, जिला-कानपुर
एम0 ए0 (हिन्दी), प्रथम श्रेणी पी0 एच0 डी0 (हिन्दी)

(अ) सेवानिवृत्त वरिष्ठ, हिन्दी अधिकारी, चीफ पोस्ट मास्टर जनरल कार्यालय लखनऊ।
(ब) लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग मे अतिथि प्राध्यापक।
(स) सुलभ प्रकाशन, लखनऊ में विशेष सलाहकार।

अनुवाद का व्याकरण और आयाम (सह लेखन), अनुवाद : समस्याएँ और समाधान, 'दीप्ति' काव्य संग्रह, हितोपदेश की कहानियाँ, कादम्बरी, कुमार सम्भव, मुद्राराक्षस, छत्रपति शिवाजी, राहुल सांकृत्यायन का जीवन संघर्ष, नयी कहानी की पूर्व पीठिका, नयी कहानी का शिल्प-सौन्दर्य, मुखौटे सजीव पुष्प, नयी कहानी का वस्तु सौन्दर्य, समय की बाँसुरी, कहाँ आ गये, चेतना के गीत, गीत राष्ट्र के, आगे विश्वबन्धुत्व और कविता : बदलते संदर्भ मे हस्तलिपि एवं हस्ताक्षर। 'रचनात्मक सहयोग।

नव काव्य मे बिम्ब विधान, पाकिस्तान की परिकल्पना (डॉ0 अम्बेडकर रचित ग्रंथ थॉट्स आन पाकिस्तान का अनुवाद), नयी कहानी का वस्तु-सौन्दर्य एक गीत संग्रह एवं एक गजल संग्रह।

अध्ययन-अध्यापन, साहित्य सेवा एवं साहित्य-सृजन तथा टेबुल टेनिस खेलना, खेलाना।

मकान सं0 558/28घ, सुन्दर नगर, आलमबाग, लखनऊ-226005, आवासीय टेलीफोन-2458284

अब लखनऊ ही स्थायी निवास एवं कार्यस्थल है।

'प्रतिष्ठा' साहित्यिक एव सांस्कृतिक संस्था, लखनऊ के अध्यक्ष, लखनऊ वेटरेन्स टेबुल टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष, देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता, समीक्षा, कहानी, यात्रा वृत्तान्त आदि प्रकाशित। जिलाधिकारी एवं नागरिक सुरक्षा संगठन, लखनऊ तथा निराला साहित्य परिषद् महमूदाबाद (सीतापुर) द्वारा सम्मानित।

गंगा दशक

गंग के रूप अनूप दिखें, कहीं भूप भगीरथ भाती है गंगा।
ब्रह्म-कमण्डल से उमड़ी, घुमड़ी, अकड़ी इतराती है गंगा
शंकर शीश चढ़ीं, उमंगी लमकीं, फिर होश गँवाती है गंगा
शम्भु ने सिन्धु से बिन्दु किया तब अम्बु स्वरूप दिखाती है गंगा।। 1 ।।

मोद से गोद चढ़ीं हिमवान, अनोखे से लाड़ लड़ाती है गंगा
आँख मिचौली के खेल रमीं, गिरि ओट सदा छिप जाती है गंगा
चंचलता चपला की लिए लुक जाती कभी, दिख जाती है गंगा
हाथ न आती हिमालय के, मुख गोमुख से बढ़ आती है गंगा।। 2 ।।

अल्हड़ता का प्रवाह रुका तो झुका कर शीश उठाती है गंगा
अंग उमंग अनंग तरंग कुरंग के रंग रंगाती है गंगा
देख न ले जग रूप अलौकिक हास-विलास लजाती है गंगा
शान्तनु का मुख सम्मुख देख, न मीन न मेख सिहाती है गंगा।। 3 ।।

हाथ बढ़ा जब शान्तनु का तब हाथ से हाथ मिलाती है गंगा
साथ ही साथ निभाने की शर्त, न रोक न टोक लगाती है गंगा।
माया न मोह न छोह न द्रोह, नहीं ममता कुछ लाती है गंगा।
प्राण से प्यारे दुलारे लला सरि को कर भेंट भुलाती है गंगा।। 4 ।।

शान्तनु को तन का सुख दे, मन के सुख को तरसाती है गंगा।
वंश के ध्वंस का नेम निभा, उनको हर बार सताती है गंगा।
राजा में राग न द्वेष न दोष न रोष रहे समझाती है गंगा।
भोग में योग, सयोग-वियोग की रीति सिखा कर जाती हैं गंगा।। 5 ।।

उत्तर से उतरीं तब दक्षिणा को द्युतिमान बनाती हैं गंगा।
संगम को हृदयंगम मान, नये प्रतिमान बनाती हैं गंगा।
नित्य नये तपसी जन को अपने यजमान बनाती हैं गंगा।
मन्दिर घाट असंख्य सजा अपना उपमान बनाती हैं गंगा।। 6 ।।

दक्षिण की गति को यति दे, मति पूर्व दिशा की बनाती हैं गंगा।
किन्तु भिटौरा को भेंट सप्रेम अनुत्तर उत्तर जाती हैं गंगा।
पूर्व अपूर्व कला को विलोक अशोक वही मुड़ जाती हैं गंगा।
रोज नवेली सहेली के साथ मनोरम खेल रचाती हैं गंगा।। 7 ।।

आँचल दिव्य पसार कछार असार को सार बनाती है गंगा।
पातक पुंज अपार उतार सदा उस पार लगाती हैं गंगा।
नीच कुलीन रहे नित कीच न रंच कभी अनखाती हैं गंगा।
टेक अपावन की हर बार निभा हरषाती हैं गंगा।। 8 ।।

पापाभिशाप को अंक लगा कर पुण्य ही पुण्य लुटाती हैं गंगा।
राजा को रंक को मान समान सदा धनधान्य जुटाती हैं गंगा।
आगत के शरणागत के जकड़े भव बन्ध छुड़ाती है गंगा।
सोच अतीत की उन्नति, संस्कृति, वैभव, जीत जुड़ाती हैं गंगा।। 9 ।।

नीर-सुधा वसुधा को पिला सुजला सुफला बन जाती हैं गंगा।
भेद तथा भव भीति मिटा कर शान्ति प्रदा बन जाती हैं गंगा।
मोक्षप्रदा शुभदा वरदायिनी देवापगा बन जाती हैं गंगा।
बिन्दु से बिन्दु मिलाती हुई फिर सिन्धुवती बन जाती हैं गंगा।। 10 ।।



कवि परिचय

नाम प्रेम चन्द्र सैनी

माता स्व0 कटोरी देवी

पिता स्व0 श्री बसन्त लाल सैनी

पत्नी स्व0 भगवती देवी

जन्म तिथि 16 7 1932

जन्म स्थान कायमगंज, जनपद-फर्रुखाबाद, उ0 प्र0

शिक्षा एम0 ए0, एल0 एल0 बी0, आर0 डी0 एस0 (आनर्स
(बाम्बे), एच0 डी0 सी0

व्यवसाय सेवानिवृत्त उप0 निबन्धक सहकारी समितियाँ उ0 प्र

सम्पर्क 570/196/3, गोपालपुरी, आलमबाग, लखनऊ,

प्रकाशित एवं प्रकाश्य कृतियाँ धन्य सहकारिता, सुखद सह0 राह,
सह0 समिति कैसे चलायें, सह0 की कर्मी, सह0
संकलन में रचनाकार कविता, बदलते सन्दर्भ, कवि
काव्यंजलि, हे मातृभूमि भारत, मम्माभिराम्, स्वाति

अभिरुचि अनेक पत्र-पत्रिकाओं पुस्तकों में लेख, एकांकी,
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर निरन्तर वार्तायें,
कार्यक्रम प्रसारित, सहकारिता मासिक पत्रिका इत्य
का कई वर्षों तक सम्पादन, अनेक साहित्यिक संस्
तथा प्रमुख कवियो के साथ मंचों से काव्य पाठ।

प्रकाश्य कृतियाँ हमसफर, दोहा, गीत, गजल, मुक्तक, छंद-संकलन

सम्मान उपाधि 'श्री तुलसी' (जन्म भूमि सूकर खेत विकास समि
राजापुर, उ0 प्र0)

पदम श्री रणवीर सिह विष्ठ स्मृति साहित्य प्रोत्सा
त्रिवेणी साहित्य सम्मान (अखिल भारतीय त्रिवेणी साहि

ज़िन्दगी मछली बिना पानी बनी है

शिष्टता ने सभ्यता ने अर्थ खोये,
सत्य भू पर झूठ ने है बीज बोये।
क्या बुरा परिणाम होगा कौन जाने,
श्रेष्ठ सब संस्कार जाने कहाँ खोये।
पनपती दुष्कर्म की खेती घनी है,
ज़िन्दगी मछली बिना पानी बनी है।

आपसी मतभेद बढ़ते हैं निरन्तर,
धर्म वर्गों मे बंटा है आज ये घर।
खो गए रिश्ते सभी संदर्भ टूटे,
दिख रहा दम तोड़ता विश्वास का स्वर।
त्रासदी से हर दिवस-रजनी सनी है,
ज़िन्दगी मछली बिना पानी बनी है।

दर्द का अहसास सबको हो रहा है,
गूँजता स्वर अर्चना का खो रहा है।
फूल उपवन के सभी कुम्हला चुके हैं,
व्यक्ति का उत्साह थक कर सो रहा है।
दृष्टि जिज्ञासा भरी, बेबस तनी है,
ज़िन्दगी मछली बिना पानी बनी है।

प्रीति करुणा भाव की है, चाह अपनी,
रीति से ही प्रीति की है राह अपनी,
प्रीति ही आधार हो अब ज़िन्दगी का,
मीत के प्रति प्रीति खोजे, थाह अपनी,
सुपथ अपनाए सभी मानव धनी है,
ज़िन्दगी मछली बिना पानी बनी है।



प्रभु सहारा मिले

रूप ने आपके, प्रभु रिझाया मुझे,
नेह डूबा हुआ हूँ, सहारा मिले।
तृप्ति किसको मिली, इस जगत में कभी,
लाभ-दर्शन का मुझको, नज़ारा मिले।

कुछ पलों बिम्ब का, पा चुका स्वाद हूँ,
कैसे मुखरित करूँ उर में शक्ति नहीं।
देखकर आपकी, वह छटा मुग्ध हूँ,
रूप तेरा निरख, उर कमल यह खिले।

रूप ने आपके, प्रभु रिझाया मुझे
नेह डूबा हुआ हूँ, सहारा मिले

दर्शनों की क्षुधा, औ' मुझे प्यास है,
तेरी अदभुत कृपा को, करूँ मैं नमन।
ध्यान की राह में, रत रहूँ रात दिन,
प्रीति का गन्ध सौरभ, तुम्हारा मिले।

रूप ने आपके, प्रभु रिझाया मुझे
नेह डूबा हुआ हूँ, सहारा मिले

इस जहाँ में मुझे, कुछ नहीं चाह है,
आपकी चाह मेरी, बनी राह है।
मैं सदा प्रीति के छंद, मनहर लिखूँ,
मेरी मंज़िल को प्रभु, अब किनारा मिले।

रूप ने आपके, प्रभु रिझाया मुझे
नेह डूबा हुआ हूँ, सहारा मिले।

कवि परिचय

नाम	**सत्यवान श्रीवास्तव**
जन्म तिथि	1.1.1935
जन्म स्थान	पुरास, बलिया, उ0 प्र0
पिता का नाम	स्व0 विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव
माता का नाम	स्व0 श्रीमती कैलाश देवी
पत्नी का नाम	श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव
व्यवसाय	महालेखाकार कार्यालय से वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त के पश्चात् इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एडवोकेट
प्रकाश्य कृति	सूखा पत्ता (काव्य संकलन)
सम्पर्क सूत्र	बी-5, मेंहदौरी स्कीम, तेलियरगंज, इलाहाबाद दूरभाष-0532-254500
विशेष	श्री सत्यवान श्रीवास्तव एक संवेदनशील कवि हैं। इनकी काव्य चेतना विकासोन्मुखी है। प्रारम्भिक रचनाएं प्रगतिवादी एवं यथार्थवादी हैं तथा परवर्ती रचनाओं में दार्शनिकता की झलक दिखाई पड़ती है। आकाशवाणी से भी इनकी कविताओं का प्रसारण होता रहता है। इनका स्वभाव अत्यन्त मृदुल है।

ग़ज़ल

जग सिया राम मय सब दिखे इसलिए,
प्राण तुलसी हृदय अरु नयन चाहिए।
द्वैत अद्वैत का भ्रम मिटे इसलिए,
शंकराचार्य का उपनयन चाहिए।

ज्योति साकार है या निराकार है,
प्रश्न पूछा शिखा से शलभ ने पहुँच।
प्यार से चूम हँसकर शिखा ने कहा
भेद यह जान तन का हवन चाहिए।

भूख अभिशाप से त्रस्त अब तक धरा
बात कैसे करूँ ज्ञान की ध्यान की।
लोक परलोक की सुधि रहे इसलिए,
भुखमरी का धरा से गमन चाहिए।

व्यष्टिवादी बधिक की प्रजातन्त्र में,
दृष्टि रहती सदा भीड़ पर ही जमी।
खून की प्यास से व्यग्र बोला विहँस,
मेमनों का समर्पित यजन चाहिए।

स्वप्न मधुवन में जब तक बजी बाँसुरी,
राधिका बन प्रफुल्लित रही नाचती।
स्वप्न गुच्छों से मदिरा कहाँ तक ढले,
स्वप्न के भी लिए अब यतन चाहिए।

ये माना कि अमृत नहीं भाग में है,
ज़हर जो मिला है यही कम कहाँ है।
गरल घूँट पीना मुश्किल नहीं पर,
शक्ति शिव कण्ठ की सी सहन चाहिए।

गीत

टीस उर की दे रही थी क्रन्दनों के सतत नारे,
रात पलको में ढली थी ढल गए थे सब सितारे
नयन में आँसू लबालब ढल गए आकर किनारे
हृदय मन्थन सुत सुधा से सीच सुधियों को सँवारे
देसके सौगात आँसू प्रीति उसको मान लूँ मैं।

कल्पना में मिलन होता मिलन से बढ़कर सुनहरा
विरह की चिनगारियो में है संकेत गहरा
क्रौञ्चवध के दर्द से अभिभूत उर में काव्य उभरा
पी कहाँ की रट लगाता टेरता व्याकुल पपीहरा
छू सके उर कोई प्रियतम गीत उसको मान लूँ मैं।

समय ने शमशीर से ही है लिखी अब तक कहानी
अणु नियन्त्रित इस धरा पर नियति है सबकी अजानी
जय पराजय की व्यवस्था पड़ चुकी कब की पुरानी
दलित जेता का मिलन ही मनुज की जय की निशानी
हर सके पर दुख पराजय जीत उसको मान लूँ मैं।

प्रसव पीड़ा मातृ उर में वात्सल्य की गंगा बहाती
परख रोगी, शव जरा को बुद्ध की पीड़ा जगाती
चोट तुलसी के हृदय की वासना जड़ से मिटाती
दर्द की अनुभूति उर में भाव के बिरवे उगाती
दे सके जो दर्द उसको मीत मन का मान लूँ मैं।

कवि परिचय

नाम	श्याम नारायण श्रीवास्तव 'श्याम'
पिता	स्व0 श्री राजाराम श्रीवास्तव
माता	स्व0 यशोदा देवी
पत्नी	श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
जन्मतिथि	1 जनवरी, 1935 ई0
जन्म-स्थान	मदारीपुर, जिला-जालौन, उरई, उ0 प्र0
शिक्षा	एम0 ए0 स्नातकोत्तर डिप्लोमा (लोक प्रशासन) [illegible]
व्यवसाय	सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी, रक्षा लेखा विभाग
सम्पर्क	554ख/88, विशेश्वरनगर आलमबाग, लखनऊ, दूर
प्रकाशित	चेतना के गीत, गीत राष्ट्र के, [illegible] सन्दर्भ
संकलन	काव्य सरिता 1999, काव्य संकलनों के सहयोगी [illegible] के काव्य संकलन में सम्पादन।
प्रकाशित गीत संग्रह	आकाश को छोटा न कर
अभिरूचि	लेखन अध्ययन एवं बागवानी
अन्य	प्रतिष्ठा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, चेतना काव्य कला संगम साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध, द्वारा साहित्य शिरोमणि सम्मान।

"बिगड़ी बात बनानी है"

उमर न व्यर्थ बितानी है, लिखनी नई निशानी है
हर झोली भर देता है, वक्त बड़ा ही दानी है

बात बात में बात छिपी बादल में बरसात छिपी
होठों पर बर्जना मगर, चितवन में सौगात छिपी
भूधर हो या समतल हो, ऊसर हो या मरूस्थल हो
पर्त हटाकर देखे तो, अन्दर निर्मल पानी है।

फूल खिला जो धूल वही, शूल वही अनुकूल वही
रुप बदलते रहते हैं, पर रहता है मूल वही
मिल जाये दिल तो हमदम, बिलग रहे तो बेगाना
संदर्भों के अन्तर से, जाती बदल कहानी है।

कोई आगत रोता है कोई स्वप्न संजोता है
कोई गत की कथरी को आजीवन सर ढोता है
सबके अपने अपने ढंग, सबके अपने अपने रंग
कोई अवढर-दानी है, कोई जरा गुमानी है

माना बुरी नजीरें हैं, छोटी बड़ी लकीरें है
किसी किसी को पंख मिले, कही कहीं जंजीरें हैं
चाहे देरी लगे भले, आगे पीछे कर्म फले
अब भी मनुआ चेत अरे, बिगड़ी बात बनानी है।

वक्त का डाकिया

ऐ हवाओं न राहों में आओ अभी,
वक्त का डाकिया हूँ न रुक पाऊँगा।
आ रही हैं मनाने सागरों लहरें,
देखती एकटक हैं निगाहें नहरें।
संग हो उम्र भर, चाहते हैं शिखर,
घाटियाँ चाहतीं, रोकना उम्र भर।
मेरा मन भी ठहरने का कुछ है मगर,
छाँव दो पल बिलमने का है कुछ मगर।
दूर चलता कहीं स्वप्न टूटेगा यदि,
राह के बीच ही जो अटक जाऊँगा।
वक्त का डाकिया हूँ न रुक पाऊँगा।

चाहता देखना अंजुमन फूलते,
मौज के पल मिलें पैंग ले झूलते।
स्वागतम् द्वार गलियों में बँधते मिलें,
हाथ हल्दी से तरुणों के रँगते मिलें।
नैन हँसते मिले, कंठ गाते मिलें,
अजनबी भी गले से लगाते मिले।
यूँ खुशी के हों क्षण, क्यों न झूमें चरण,
डर बहुत है कि शायद बहक जाऊँगा।
वक्त का डाकिया हूँ न रुक पाऊँगा।

मैं यहाँ हूँ मगर मेरा मन है वहाँ,
तक रहे आसमाँ को, नयन हैं जहाँ।
जिस जगह पोखरों में दरारें पड़ीं,
गिन रहीं तृण जड़ें नित्य दिन पल घड़ी।
अश्रु बह-बह जहाँ नेत्र पथरा गये,
कूप-तल सूख कर और गहरा गये।
है पहुँचना जरूरी वहाँ तक मुझे,
क्या कहेंगे जो पहले ही चुका जाऊँगा।
वक्त का डाकिया हूँ न रुक पाऊँगा।

कवयित्री-परिचय

नाम	**डॉ0 सुधा जैन**
जन्म	4 फरवरी 1935
शिक्षा	एम0 ए0, पी0 एच0 डी0 (हिन्दी)
अध्यापन	पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में कई वर्ष तक अध्यापन।
लेखन एवं प्रकाशन	तीन कविता संग्रह, एक कहानी संग्रह, लेख संग्रह एवं शोध ग्रन्थ प्रकाशित
सम्मान एवं पुरस्कार	विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित।
विशेष उपलब्धियाँ	कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय की छात्रा ने कहानियों पर शोध कार्य करके एम0 फिल की डिग्री प्राप्त की।
	कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय रोहतक और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एम0 ए0 के पाठ्यक्रम में कुछ कविताएँ सम्मिलित।
	संगीत, चित्रकला और दर्शन में विशेष रुचि।
	रचनाएँ आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित।
सम्पर्क	डॉ0 सुधा जैन, कोठी नं0 4, सेक्टर 6, पंचकूला, हरियाणा दूरभाष [illegible] 2560106, 2565629

रोशनी के टुकड़े

दूसरे शहर मे
होस्टल जाते बेटे का
सामान बाँधते हुए
उसकी मुट्ठी में
रख दिये मैंने

कुछ रोशनी के टुकड़े
वक्त बेवक्त अन्धेरे में
ठोकर नही खाओगे।
चन्द वर्ष बाद

बेटा लौटा
तो आँखे सुर्ख थीं
काँपते थे ओंठ
मेरे दिये टुकड़े
फेंक दिये
मेरे मुँह पर
बाबा आदम की
ये जंग लगी टार्चें

रखो अपने पास
प्रतिभा चमकाने को

अब तुम्हारे
घिसे पिटे मूल्य भरा
आधुनिक परिवेश वर्जित
कुछ मौन शब्द

तुम्हें मेरे उपहार
प्रतिभा उसी तरह
भीतर उग आती।
तुम्हारी सारी पुरानी
[illegible] मुट्ठी
[illegible]
पापा के दिये [illegible]
[illegible]
किसी के पास
पापा कितना कम
पर सम्भाले न रखी
उसकी मम्मी।

फटी-फटी आँखों से
देखा मैंने बेटे को
फिर देखे
फर्श पर बिखरे
रोशनी के टुकड़े।

खिलौने

आदर्श उसके मुँह से
हर वक्त
फव्वारे से छूटने
संस्कृति की बात
धारावाहिक
उमड़ती बदलियों सी
बरसती
बात करते करते
उसके चेहरे पर
मुस्कान यों फैलती
जैसे रात के अन्धेरे में
जब-तब
कोई बिजली कौंधती
श्रद्धा से नत लोग
समझते
इस कलियुग में
कोई देवदूत
उतर आया।
बहुत बाद में
समझे लोग
यह आधुनिक मुहावरा।

आदर्श अब
खाये-पिये नहीं
सिर्फ बोले जाते
संस्कृति अब
ओढ़ी नहीं
केवल ओढ़ाई जाती
इसीलिए
जगह-जगह
लगे हैं ढेर
संस्कृति आदर्श
और मूल्यों के
जैसे खिलौने की
दुकानों पर
खिलौने सजे हो
कुछ देर
खेल-खेल कर
फेक देने के लिए
या 'ड्राइंगरूम' की
अलमारियों में
'डेकोरेशन पीसेज' की तरह
सजा देने के लिए।

कवि परिचय

नाम	कृष्ण मोहन "सुधाकर"
जन्म तिथि	20 जुलाई, [illegible]
शिक्षा	[illegible]
पिता	स्व० [illegible] प्रसाद मिश्र
वर्तमान पता	554-[illegible], [illegible] नगर, लखनऊ,
	[illegible]
प्रकाशित कृतियाँ	मंजूषा (कहानी संग्रह)
प्रकाश्य कृतियाँ	(1) [illegible] (काव्य संग्रह)
	(2) [illegible] (काव्य संग्रह)
	(3) [illegible]
विशेष	"सुधाकर" जी [illegible] आकाशवाणी केन्द्र लखनऊ से समय-समय पर [illegible] होता रहता है। [illegible]

प्रणय दीपक

मैं किसी के प्रणय दीपक-
की जलन बन, जल रहा हूँ,
और भीगी-साँस में-
उच्छ्वास बनकर, गल-रहा हूँ।

सुन रहा, मुख से तुम्हारे-
कि दूर मैं, तुमसे रहा हूँ,
किन्तु तेरे ही हृदय में-
'पीर' बनकर पल-रहा हूँ-
मैं किसी के..........

नित्य 'रवि' उगता नया-
'शशि' भी बदलता निज कलायें,
किन्तु आँगन में हमारे-
गूँजती दुःखमय कथायें।

ध्यान कब मुझको? पुराना-
और नूतन रूप क्या है?
क्योंकि मैं, बीते-क्षणों से-
हृदय निज बहला-रहा हूँ।
मैं किसी...........

तुम हँसो, मुस्कान ले-
अपने पुरातन हास्य में ही,
तुम खिलो, अपनी 'युवा' की-
अनोखी, उस शान में ही।

मैं जिसे 'अनुराग' का उपहार-
कह, मन छल- रहा हूँ,
दूरियों को, मधुर-मन्जिल की-
घटाता चल रहा हूँ।

मैं किसी के प्रणय दीपक-
की जलन बन, जल रहा हूँ,
और भीगी-साँस में-
उच्छ्वास बनकर गल-रहा हूँ।

कवि परिचय

नाम	डॉ0 गणेश दत्त सारस्वत
जन्मतिथि	10 सितम्बर, 1936
शिक्षा	एम0 ए0, पी0 एच0 डी0
जन्म-स्थान	बिसवाँ, सीतापुर, उ0 प्र0
प्रकाशित काव्य कृतियाँ	(1) [illegible] (गीत संग्रह)
	(2) विभीषण (खण्ड काव्य)
	(3) तुलसी की [illegible] (मुक्तक काव्य)
	(4) विविधा (काव्य संग्रह)
	(5) जागो भैया (बाल कविताओं का संग्रह)
	(6) डाक्टर बाबा (बाल कविताओं का संग्रह)
प्रकाशित गद्य कृतियाँ	(1) उद्धव शतक विवेचनात्मक अध्ययन
	(2) इस्लाम दर्शन
	(3) घनानन्द
	(4) हिन्दी भाषा विज्ञान
	(5) साहित्यिक निबन्ध
	(6) महाप्राण निराला
	(7) हिन्दी लोक साहित्य
	(8) प्रेरक विभूतियाँ
	(9) हिन्दी कविता कल और आज
	(10) सीतापुर जनपद के कवि
	(11) सनेही मण्डल
सम्मान	उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, 'साहित्य भूषण सम्मान' से सम्मानित कर 25, 501 रुपये की धनराशि सादर भेंट की और गौरव का अनुभव कर र[illegible]
विशेष	डॉ0 गणेश दत्त सारस्वत जीवन की प्रभात वेला से ही साहित्य [illegible] एव साहित्यिक चेतना के जागरण में संलग्न हैं। उनकी साहित्य [illegible] मेरी (सम्पादक की) दृष्टि में साधन कभी नहीं रही, साध्य रही [illegible] उनका प्रखर कवित्व तथा उनकी ओजस्विनी वाणी ने हजारों साहित्य[illegible] नव युवकों को सारस्वत पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

पथ पर कोई फूल बिछाए ना

मैं काँटों पर चलने का आदी हूँ, पथ पर कोई फूल बिछाए ना।

तूफानों से मैं भिड़ता रहता हूँ, ठोकर खाकर भी आगे बढ़ता हूँ।
मँझधारों को समझूँ क्या माँझी हूँ, लहरों से मैं लड़ता ही रहता हूँ।

पूनम सी मेरी अपनी चाहे हैं– चन्दा पर कोई धूल उड़ाए ना।
संघर्ष मुझे प्रिय हैं–कब हारा हूँ, नभ का न सही, भू का तो तारा हूँ।
सीमोल्लंघन करना आसाना नहीं, बढ़कर देखो तो तप्त अंगारा हूँ।

प्रलय निहित है दृष्टि श्रेय मे मेरे– मुझसे कोई आँख मिलाए ना।

चाहा मैंने कब मधु की धारो को, अपना ही तो समझा है हारो को।
मैं परख चुका हूँ अपने ही बल पर– क्रूर नियति के इन क्रूर इशारो को।

मैं ब्रज संदेश हूँ, मुझसे भिड़ ना कोई– हस्ती को अपने महल ढहाए ना।

शान्ति साधना मेरी नहीं विवशता, प्रलयंकर हूँ, अक्षय रौद्र-विरूदता।
अधरों पर है हास, हृदय में ज्वाला– जय होगी, सक्षम है मेरी क्षमता।

क्यों, क्या जाने कब बरस पड़ूंगा मैं– बढ़कर कोई बात बढ़ाए ना।



कवि परिचय

नाम — डा0 किशोरी शरण शर्मा

जन्मतिथि — 16 जून, 1936 ई0

जन्मस्थान — ग्राम एवं पत्रालय-कैथानी, [illegible] [illegible] [illegible]

माता/पिता — स्व0 रामरती देवी एवं स्व0 [illegible] [illegible] [illegible]

शिक्षा — एम0 ए0 एम0 (मास्टर ऑफ [illegible] [illegible]), वाराणसी में परिवार नियोजन की [illegible] [illegible] पर शोध सन् 19[illegible] ई0।

सम्प्रति — सेवानिवृत्त राज्य कार्यक्रम अधिकारी ([illegible] [illegible] संचार) प0 क0, उ0 प्र0 लखनऊ।

प्रकाशित कृतियाँ — (काव्य) कम्पन, माँ, उद्बोधन, [illegible], [illegible] (कविता-संग्रह/प्रबंध काव्य), [illegible] [illegible] [illegible] माँ का प्यार, हम सब बालक, भारत माँ [illegible] [illegible] बोला-सभी बाल कविता संग्रह।

प्रकाश्य कृतियाँ — शरण दोहावली, [illegible] (काव्य संग्रह), [illegible] [illegible] चार यो अट्ठी (भोजपुरी [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible]

अन्य प्रकाशन — बीस से अधिक [illegible] में कविता, [illegible] [illegible] सम्मानित पत्र-पत्रिकाओं तथा [illegible] द्वारा [illegible] लेखों, संस्मरणों, वार्ताओं तथा साक्षात्कार [illegible] स्वास्थ्य परिवार, कल्याण एवं प्रौढ़ शिक्षा [illegible] पत्रकार स्मारिका के लेखन में महत्वपूर्ण [illegible]।

सम्पादन — वीणा वादिनी वर दे' तथा राष्ट्रीय [illegible] ऐतिहासिक भूमिका के साथ सम्पादन व प्रकाशन। [illegible] मेरठ, गीतकार-हिन्दी मासिक-नई दिल्ली तथा अवध [illegible] लखनऊ में क्रमश: मुख्य [illegible] सम्पादक, [illegible] सहयोग सम्पादक के पदों पर दीर्घ समय तक [illegible] (द्वैमासिक) के परामर्शदाता।

संस्थापक/पदेन — परिज्ञान साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठान, [illegible] साहित्यकार सुस्मृति संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष।

सम्मान — विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार [illegible] विद्यावाचस्पति सन् 1993 में विद्यासागर ([illegible] [illegible]) बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना द्वारा सर्वोच्च [illegible] प्रदत्त। इनके अतिरिक्त अनेकानेक ख्यातिप्राप्त [illegible] संस्थाओं द्वारा काव्य श्री, साहित्य श्री, [illegible] [illegible] अलंकृत। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा "डा0 किशोरी [illegible] एवं कृतित्व" विषय पर एम0 फिल0 हेतु शोध (1997) [illegible] राईटर्स एण्डिंग 1999, दो सौ अस्सी साहित्यकार, वस्तुपरक इतिहास व अनेक ग्रंथों में परिचय तथा [illegible] उल्लेख।

सम्पर्क — 14 रेवती बिहार (खड़गपुर), इन्दिरा नगर, लखनऊ [illegible]

पुष्प गीत के तुम्हें चढ़ाता हूँ

गीतों की हरियाली लेकर मैं नित आता हूँ।
विविध भाँति के पुष्प गीत के तुम्हें चढ़ाता हूँ।।
मुझ पर था प्रतिबन्ध किन्तु मैं हुआ नहीं भयभीत।
दिग-दिगन्त से झंकृत होकर गूँज उठा संगीत।।
अग्नि जली अन्तर पा फिर भी जला नही मकरन्द।
चिन्तन असि ने काटा बन्धन, प्रणय रचा नव छन्द।।
छन्द वन्द के रूपक में मै तुमको पाता हूँ।। 1 ।।

मैं गुलाब का सौरभ लाता, अमराई की गंध।
रजनी गंधा प्रेरित करती, अमिय अबध सम्बन्ध।।
झड़ता हरसिंगार उल्लसित दे नूतन संदेश।
जलज उठा देता अवगुंठन तोड़ सभी परिवेश।।
उनका उत्स सहज मनभावन निज में पाता हूँ ।। 2 ।।

अपना है अनुबन्ध उसे हमने ही जाना है।
औरों को कुछ पता नहीं, कब उसको माना है।।
लहरों और किनारों के आलिंगन मे करूणा।
हिम को पिघलाने के पहले जलती है वरुणा।।
निज को स्वयं जलाता हूँ मैं औ पिघलाता हूँ।। 3 ।।

निशा हार कर सो जाती है, मैं कब सोता हूँ?
दिव्य भाव की पावन सरि मे तिरता होता हूँ।।
रोम-रोम संगीत तुम्हारा गुंजित जब होता।
शब्द मनोरम गतिमय होते, मैं बंधित होता।।
सत्य-रूप आनन्द अपरिमित प्रतिपल पाता हूँ।। 4 ।।

जाग रहा है प्रतिपल

अर्धरात्रि की निविड़ निशा में जाग रहा मैं प्रतिपल।
तुम हो मौन और मैं मुखरित, फिर भी होती हलचल।।

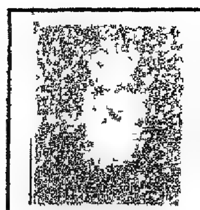
प्रणय जागकर हर्षित होता या क्रन्दन करता है?
या करता उद्विग्न हृदय को, चैन न पल भरता है।।
आखिर तुम क्यों बहुत दूर से प्रिय! चलकर आते हो?
प्रणय उदधि मे मुझे डुबोकर अविरल नहलाते हो।।
समझ न कुछ भी मुझको आता मन होता क्यों चंचल।। 1 ।।

पलक ओढ़ाकर मैं तो अपनी पुतली सदा छिपाता।
तब भी अन्तर मन अनजाने तुम से है टकराता।।
क्यो ऐसा होता है प्रियतम! नींद नहीं आती है?
उर वीणा झंकृत होती है, मधुर गीत गाती है।।
सतत निनाद हुआ करता है, सरिताओं सा कल-कल।। 2 ।।

तुमको निरख हृदय मेरा क्यों नर्तन करने लगता।
माया रहित सरोवर में प्रिय! भाव विभावित तिरता।।
मोह छोह छल छदम् न होते, होता नहीं कपट भी।
क्रोध शोक प्रतिशोध न होते, होती नहीं लपट भी।।
अनुरागी अन्तर होता है, कहीं न दिखता दल-दल।। 3 ।।

दुःख सुख में या तम प्रकाश में भेद नहीं होता है।
जन्म मृत्यु की हँसी रूदन का खेल नहीं होता है।।
इन सबका कारण है प्रियतम! सहज तुम्हारा आना।
लौकिकता के महासमर में प्रेम तुम्हारा पाना।।
यह अनुबन्धन बना रहे प्रिय ! अन्तर्मन हो संदल।। 4 ।।
अर्धरात्रि की निविड़ निशा में जाग रहा मैं प्रतिपल।।

कवि-परिचय



नाम	राम चरण शुक्ल
जन्म-तिथि	16-07-1936
पिता	स्व0 राम भरोसे शुक्ल
सम्पर्क सूत्र	554 ख/187 विश्वेश्वर नगर आलम बाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
विशेष	पुलिस विभाग से सेवा निवृत्त शुक्ल जी हिन्दी की सेवा में संलग्न हैं। कई वर्षों से साहित्यिक एव सास्कृतिक सस्था 'प्रतिष्ठा' से सम्बद्ध है। स्थानीय कवि-गोष्ठियो में बराबर सम्मिलित होते हैं। 'नमामि रामम्' काव्य-कृति मे उनकी कुछ कविताए संग्रहीत हैं। जन-जीवन में नयी चेतना जागृत करना इनकी कविता का मुख्य उद्देश्य है। इनकी अधिकाश रचनाएं अपनी सहज भावों की अभिव्यक्ति से हृदय को अनुरजित करती हैं।

पीड़ा

तुम्हे हम भूल न पायेंगे।।
जिनके लिये जिये हम जीवन
गंध लुटाते रहे सुमन बन
आपस में हो गहरी प्रीति
सच्ची स्वर्ग सृजन की रीति,
मिल-जुल कर अपने घर को हम स्वर्ग बनायेंगे
तुम्हें हम भूल न पायेंगे।।
जिनके लिये खिलाये उपवन,
जिनके हित महके बन नन्दन
यही संवेदन जग आधार
उन्हीं से बनता हृदय-उदार
भावो का वैभव प्राणों द्वारा पा आयेंगे,
तुम्हे हम भूल न पायेंगे।
आगे बढ़ हम दुख बटायें,
सुख बाँटें मुसकान खिलायें
बंधायेंगे हम सब को धीर
हरेंगे मिल कर उनकी पीर
अपनी धरती पर आनंद की अनुभूति करायेंगे।
तुम्हें हम भूल न पायेंगे।।
अगर चुके पाथेय जुटायें हम तुम तन-मन-धन
और खिला दें धरती पर मुस्कान
ध्यान और आनन्द ज्वार उछाल
सुखद स्मृतियाँ रखें सम्भाल
पीड़ा की अनुभूति प्राण से मिटा न पायेंगे
तुम्हें हम भूल न पायेंगे।

संकल्प

.न मंगल मे जुट जाने का मन से संकल्प जगायेंगे
गा तब सुख का सृजन इसी धरती को स्वर्ग बनायेंगे

आपाद स्वार्थ में डूबो को सर्वार्थ भाव सिखलायेंगे,
जन पीड़ा की अनुभूति करा व्याकुल मन को समझायेंगे।
गौरव महिमा संग सुख अनन्त अपने जीवन मे आयेंगे,
हम महा प्राण के अंशज हैं संकल्प यही दोहरायेंगे।

न मंगल में जुट जाने का मन से संकल्प जगायेंगे।।

युग को पीड़ा पी जाने को अन्तर मे आप समायेंगे,
अनतयामी अन्तरतम में संवेदन भाव जगायेगे।
हमको प्रतिपल अनुभव होगा अन्तरमन को समझायेंगे,
उज्वल भविष्य संकल्प सुमन हम जन जन तक पहुँचायेंगे।

.न मंगल मे जुट जाने का मन मे संकल्प चलायेंगे।।

यह सब जग विश्वम्भर का ही है यह भी अभ्यास करायेंगे,
प्राणों मे सत्य शिवम् सुन्दर सदभाव स्वयं भर जायेंगे।
आनन्दित होगे दिग दिगन्त सुख के सागर लहरायेंगे,
हम प्राण तत्व को गतिमय कर जनहित की गंग बहायेंगे।

न मंगल में जुट जाने का मन से संकल्प चलायेंगे।।

इस लोक हित खुद दीप बन कर प्रज्वलित हो आयेगे,
डर-वेदना से तड़पतों को अमृत स्त्रोत दिखायेंगे।
अब है समय अनुदान की कीमत चुकाने जायेंगे,
ज्योति शाश्वत कर समपर्ण चरण शीश झुकायेंगे।

.न मंगल में जुट जाने का मन से सकल्प जगायेंगे।।

कवि परिचय

ाम	हितेश कुमार शर्मा
न्म दिन	30 दिसम्बर, 1936
ताजी का नाम	डा0 रघुनाथ प्रसाद शर्मा 'प्रा0 वि0'
'वसाय	कर अधिवक्ता " 1960 से
ाशय कृतियाँ	व्यापार कर संबंधी कानून की 11 पुस्तकें प्रकाशित हुई।
	स्वरचित कविताओं के 4 संकलन प्रकाशित हुए। को जोड़कर प्रकाशित किए।
	लगभग एक दर्जन से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एवं साहित्यिक संस्थाओं के पदेन अध्यक्ष या अध्यक्ष
	भारतीय स्काउट व गाइड्स के आजीवन सदस्य।
	रोटरी मण्डल-3100 में 98-99 के मण्डलाध्यक्ष।
	निम्न महत्वपूर्ण सम्मान प्राप्त किए :-
	1) गवर्नर रोटरी अंतर्राष्ट्रीय 1998-99 मण्डल
	2) मैन आफ दी ईयर 2000 (ए0 बी0 आई0) यू0 द्वारा।
	3) 20वीं शताब्दी रत्न सम्मान (साहित्यिक एवं स पर विशिष्ट प्रशस्ति-पत्र।
	4) प्राकृतिक चिकित्सक संघ, नई दिल्ली द्वारा
	ब्राह्मण अंतर्राष्ट्रीय के -विश्व उपाध्यक्ष।
	रामवृक्ष बेनीपुरी सम्मान "काव्य के क्षेत्र में"
सम्पर्क	हितेश कुमार शर्मा
	एडवोकेट
	गणपति कांपलैक्स सिविल लाइन, बिजनौर-24670
	(उत्तर प्रदेश)

आदमी

सभ्य कितना हो गया है आदमी,
क्या कही तुमको मिला है आदमी।

दोस्तो में अब नहीं मिलता मगर,
दुश्मनों में खो गया है आदमी।

बाप का सर फोड़ कर पहले मियां,
घाव को फिर पूजता है आदमी।

हो सके तो आप खुद मे ढूंढिये,
आपके अंदर छुपा है आदमी।

छू रही आकाश को शैतानियत,
और बौना हो गया है आदमी।

आदमी तब आदमी रहता नहीं,
जब किसी का कत्ल करता आदमी।

जो किसी का भी नही खुदगर्ज है,
हम उसे कैसे कहेगे आदमी।



तनहाई

सावन की सुरमई रात की तनहाई मे सपना देखा,
जैसे बादल बरस रहा है, जैसे पायल खनक रही है।

जो तुम कहकर नहीं गये थे, शायद अब वह सच होना है।
पाया जो अब तक नहीं था, उसको ही फिर से खोना है।
होनी का अनमोल खजाना, अनहोनी के कई बहाने,
जाग रही अनहोनी शायद, होनी का अब क्या होना है।

अंधकार मे भरमाया मन सोच, सोच कर बहल रहा है,
जैसे मनुआ सरस रहा है, जैसे दुनिया तुनक रही है।

कल बीता परसों भी बीता, बीत गये कितने ही पल छिन,
सोते जगते रात कट गई, काम काज मे व्यस्त रहा दिन।
तुमने जाने क्या सोचा है, लेकिन कुछ तो सोचा होगा,
अंतर में स्मृति तुम्हारी बजा रही है ताक धिना-धिन।

सर के नीचे हाथ लगा तो, जाने क्यों ऐसा लगता है,
जैसे तुमको परस रहा है, जैसे ढोलक धनक रही है।

भाग्य कहीं दुर्भाग्य कहीं, सौभाग्य कहीं अद्भुत रचना है,
नचा रहा कोई कठ पुतली, किसके इंगित पर नचना है।
बिका हुआ तो नहीं मगर, सारा जीवन जैसे बंधक हो,
अनदेखी यात्रा है लेकिन, संभव क्या इससे बचना है।

अदभुत है भावना बिरह की पल यों, पल में यों लगती है,
जैसे आंखे बरस रही है, जैसे मदिरा छनक रही है।

कवि-परिचय

वीरेन्द्र प्रकाश गुप्त

'अशुमाली'
स्व0 सुश्री मनोहरी देवी
स्व0 श्री मुसद्दी लाल गुप्त
स्व0 सुश्री ऊषा गुप्त
1 2 1937 (एक फरवरी उन्नीस सौ सैंतीस)
बिजनौर, उत्तर प्रदेश
एम0 ए0 (इतिहास), एल0 टी0, साहित्यरत्न, सिद्धान्त-भास्कर
कुछ वर्ष अध्यापन, 1961 से 1995 तक रक्षा लेखा विभाग में कार्यरत। रक्षा लेखा नियंत्रक (मध्य कमान) लखनऊ से सेवा-निवृत्त।
लेखन, पठन-पाठन, भ्रमण, साहित्य एव समाज सेवा।
अशु आवास, 554/ख/113 विशेश्वरनगर, आलमबाग लखनऊ-पिन 226005 फोन- 2450282

1 अरुणिमा (दो खण्डों मे)
   प्रथम खण्ड-सात लम्बी कविताएँ
   द्वितीय खण्ड-प्रण की लाज (खण्ड काव्य)
2 आराध्य (खण्ड काव्य वरदान एव आराधना गीत)
3 जय हिन्द! जय देवनगरी
4 सम्पादित सहयोगी सकलन

चेतना के गीत, गीत राष्ट्र के, जगे विश्व बन्धुत्व, कविता· बदलते सन्दर्भ, लेखा-भारती, कविता गूँजते स्वर, स्मारिका-शिवांजलि, प्रतिष्ठा-प्रभा,कविता हस्तलिपि एवं हस्ताक्षर

ज्योति-कलश, धूप एक बरामदे की, काव्याकाश, काव्यधारा, शब्द नये गढ़ने हैं, अनागत के कमल हम हैं, वरदे वीणा वादिनी, कवि कुल के स्वर, समय की शिला पर, जय भारत जय हिन्दी, शब्द बोलते हैं। नवचण्डी स्मारिका (मेरठ), बाल सुमनो के नाम, समकालीन हिन्दी गजले, कविताः बदलते सन्दर्भ, लखनऊ छावनी का इतिहास (सेना मुख्यालय मध्य कमान लखनऊ द्वारा 1000/- का पुरस्कार), काव्य-सरिता, स्वाति, शब्द की शक्ति को बचाना है। वन्दे मातरम् (राष्ट्रीय गीत संकलन), अन्वेषिका (गीत-संकलन) सोन-चिरिया, शब्द बोलते हैं, नीलमणि, है मातृभूमि भारत, नई शती के नाम, नमामि रामम्, काव्य गरिमा।



कोई गीत तुझे भाजाए

रचता इसी लिए गीतों को, कोई गीत तुझे भाजाए,
मेरा स्वर-सितार सम्मोहन शायद तुझे वहीं ले आए।

जाने कौन दिशा आजाओ, मैंने तो हर द्वार बुहारा,
वातायन के पोर-पोर को मैंने भरकर नयन निहारा,
केवल मिली तुम्हारी छाया, मैंने जहाँ-जहाँ भी खोजा।
थक कर चकनाचूर हो गया, दूभर अब अपना भी बोझा,

यह अरण्य् रोदन ही शायद, पाषाणों मे प्राण जगाए,
रचता इसीलिए गीतो को, कोई गीत तुझे भा जाए।

अपने इन गीतों में मैंने, अन्तर का अनुराग भरा है,
ज्वाला मुखियो का लावा, तो सुख वैभव का त्याग भरा है।
जलनिधि मे रहकर भी मैंने, अपनी अमिट पिपासा पाली,
कूप, सरोवर, नदियों भटका, पर गागर खाली की खाली।

रंग-बिरंगी इस माला का, कोई सुमन तुझे ललचाए,
रचता इसी लिए गीतों को, कोई गीत तुझे भाजाए,

कण-कण की करुणा निचोड़ कर मैंने इन गीतो को सींच
उर-अम्बुधि का मंथन करके, भावुकता नवनीत उलीच
मधुरिम स्वर पाने को कब से, वंशी बनकर तपा आग में
स्वर्णकार बन हर अक्षर मे केवल पीड़ा जड़ी भाग मे

चिर-संगी पीड़ा-चिंगारी, शायद कभी तुझे सुलगाए,
रचता इसीलिए गीतो को, कोई गीत तुझे भाजाए

आज नहीं तो कल या परसों, यही गीत दिल बहलाएँ
जब-जब अम्बर-धरा तपेंगे, शीत छाँव बनकर छाएगें
भँवरों में गुंजार इन्हीं से कलियों में मुस्कान मिलेगी,
शैशव की किलकारी बनती झंकृत जीवन-तान मिलेगी

इस अटपट वाणी का कोई आखर शायद कभी रिझाए,
रचता इसी लिए गीतों को, कोई गीत तुझे भाजाए।

अंशुमाली-उपासना

अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन।
ध्यान, दर्शन, मनन सर्व-मंगल-करण।।

तुमसे भासित भुवन, तुमसे दीपित गगन,
सृष्टि के प्राणधन, दिव्य-सृष्टा-नयन।
भास्कर, सूर्य, रवि, भानु, शशि-प्राणधन,
अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन्।

तुम दिवाकर, प्रभा-पुंज, कमलेश हो,
तुम अरूण, देव-सविता, अनलवेश हो।
तुष्ट करते तुम्हे भक्त-जन कर यजन,
अंशुमाली! तुम्हें चर अचर का नमन्।

रूप-रमणीयता में तुम्हारी छटा,
वारि पीकर, सुहागिन हुई, हर घटा।
कर रहा हर सितारा, प्रभा-आचमन,
अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन्।

रात-दिन, मास, ऋतु, युग तुम्ही से बने,
आयु-आशीष पाकर, तुम्हारा तने।
छवि मलिन कर न पाया तुम्हारी ग्रहण।
अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन्।

दूर करते दुरित, पुण्य-तरू अकुरित,
हर तपस्या फलीभूत होती त्वरित।
रश्मियाँ कर रहीं पाप-तम का हवन,
अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन्।

उपनिषद, वेद, गीता विरूद गा रहे,
अनगिनत नाम-गुण-रूप बतला रहे।
कर सका कौन पूरा, भजन-कीर्तन,
अंशुमाली! तुम्हें चर-अचर का नमन्।

ध्यान, दर्शन, मनन, सर्व-मंगल-करण,
अंशुमाली! तुम्हें 'अंशुमाली' नमन्।

कवि परिचय

प्रेम सागर बहल

''सागर होशियारपुरी''

थि 25-03-1937

। नाम स्व0 श्री करम चन्द बहल

पता 583/452 पुराना ममफोर्ड गंज
(मस्जिद के निकट। इलाहाबाद-211002

दूरभाष : 0532/ 264246

सागर होशियारपुरी गज़ल और नज़्म के मशहूर शायर
और कवि-सम्मेलनों में बराबर आमंत्रित किये जाते हैं,
केन्द्र इलाहाबाद मे इनकी रचनाओं को सम्मान दिया जा
पत्रिकाओ में समय-समय पर रचनाओं का प्रकाशन हु
प्रयागीय कतिपय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी
भारतीय साहित्य कला मंच, प्रयागीय शाखा के वरिष्ठ उप
में इस संस्था के गठन से लेकर अब तक सतत् इनका
रहा है। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्री सागर होशि
सहृदय एवं सौम्य व्यक्तित्व के मालिक हैं। इनकी रचनाओं
व्याप्त विसंगतियों पर केवल तीखा प्रहार ही नहीं दिखाते हैं
सम-सामयिक उत्तर भी इंगित कर देते हैं।

गज़ल

तेरी मिट जाएगी हस्ती, तू फना हो जाएगा,
जो जबाँ खोली तो तनसे सर ज़ुदा हो जाएगा।

हुस्न की तासीरो-ताकत का पता हो जाएगा,
जब तेरा उस दिलरूबा से सामना हो जाएगां

कत्ल का है एक जो तनहा गवाहे-चश्मदीद,
धमकियो से डर के वो भी लापता हो जाएगा।

सीख लोगे तुम अगर पानी से दर्से-आजिज़ी,
जिस तरफ़ भी चल पड़ोगे रास्ता हो जाएगा।

आज ये मासूम बच्चा मस्त है, बेफिक्र है,
कल यही दुनिया के ग़म मे मुब्तला हो जाएगा।

तुम भी कह दो खत्म कर देंगे गरीबी मुल्क से,
इन गरीबो को ज़रा फिर हौसला हो जाएगा।

दुश्मनी इन्सान की यूँ ही अगर बढ़ती रही,
एक दिन सारा जहाँ ही करबला हो जाएगा।

हिरण्यकश्यप का था कहना उसकी सब पूजा करें,
इस तरह से क्या कोई बन्दा ख़ुदा हो जाएगा।

कौन सुनता है सदा, अब आजकल दरवेश की,
वो तो कहता है भला कीजे भला हो जाएगा।

आइनों के साथ रहने की भी आदत डाल लो,
रफ़्ता-रफ़्ता दिल तुम्हारा आइना हो जाएगा।

मैं इसी उम्मीद पर जिन्दा हूँ 'सागर' आज भी,
एक दिन वो बेवफा खुद बावफ़ा हो जाएगा।

ग़ज़ल

ख़ुदा के नाम पर उसने पिलाया जाम रह-रह कर,
ज़माने ने किया नाहक़ मुझे बदनाम रह-रह कर।

मेरी दीवानगी का हाल वो पूछे तो कह देना,
दरो-दीवार पर लिखता हूँ उनका नाम रह-रह कर।

मैं शामे-ग़म को रुख़सत करके इत्मीनान क्या पाऊँ,
पलट कर आ ही जाती है ग़मों की शाम रह-रह कर।

गुजर कैसे करे कोई, बसर कैसे करे कोई,
मुसलसल बढ़ रहे हैं चीज़ों के अब दाम रह-रह कर।

वही उठना, वही खाना, वही पीना, वही सोना,
हमें करने हैं सारी ज़िन्दगी ये काम रह-रह कर।

बहुत लड़ते हैं तेरे नाम पर तो तेरे ये बन्दे,
मगर कितने हैं जो लेते हैं तेरा नाम रह-रह कर।

रहें मेरी नज़र के सामने वो हर घड़ी, हर पल,
जो जाएँ दूर तो भेजा करें पैग़ाम रह-रह कर।

अगर अब नाम होता है तो हो जाने दे ऐ 'सागर',
गुज़ारी ज़िन्दगी तूने बहुत गुमनाम रह-रह कर।

कवि-परिचय

डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह 'अखिलेश'

08-07-1938

बी0 एस0 सी0, एम0 ए0, एल0 एल0 बी0;
पी0 एच0 डी0

स्व0 हीरा लाल सिंह

ग्राम-सहबाबाद, पोस्ट- पिपरगॉव
जनपद-फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)

(1) चिन्जी, (2) मधुपकरडी, (3) कुसुमकली

(1) रेशमी राखी, (2) अभिमान, (3) गीत-पुष्पांजलि।

(1) इकतारे की गूँज, (2) छायादार पेड़
(3) बीमार मेरी भाभी (4) कीड़े-मकोड़े
(5) तम्बाकू का पौधा (6) गोधन मामा

कहानी- शृंगी वन का रहस्य

(1) कन्नौज का प्रहरी (2) हल्दी घाटी का बाघ

(1) हिमालय की सूखी डाल (2) पीनस

(1) लालबाग की चूड़ैल (2) कफन के लिए पैसे
(3) उल्टी रीति पहाड़ों की

569/40 एल0 डी0 ए0 कालोनी
लखनऊ, उत्तर प्रदेश दूरभाष : 2437552

'अखिलेश जी एक संवेदनशील कवि हैं। सरलता एव गेयता इ
की विशेषताएं है। साहित्य की विविध विधाओ में इनकी लेखन
अपनी छाप छोड़ रही है जो अन्तत: प्रत्येक पाठक के अन्तर
लेने में सक्षम है।

हिन्दी

जय हिन्दी, जय नागरी, जय हिन्दी जय भारती,

तेरी गोदी में स्थित हैं, सूर, कबीरा, आलवार,

वीरों की गाथाएँ तुझमें, मानी राजस्थान की,
तुझमें गुरु की महिमा, तुझमें वाणी सन्त महान की;

तू तुलसी की हुलसी माला, भक्ति भरे अरमान की,
तेरी उर्दू सखी सहेली, घूँघट आज उतारती।

पंत प्रसाद निराला तेरे, सुत अभिनव अभिमानी हैं।
मीरा जैसी देवी पीड़ा, दर्दों की पटरानी है।

रीतिकाल की रीति बसंती, उर की बनी सयानी है,
नाटक, कथा व्यथा पूरित है, उपन्यास बलिदानी है।

सौरभ पूरित तू परागमय, जनमन अमिट सुहारती।

बँगला, उड़िया, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, गुजराती।
असम, बिहारी, पंजाबी सी, तेरी सखी निहारती।

तुझे सुहागिन अपनाने को, स्व सौभाग्य विगारती।
जीत रही तू विश्व विभव पर, भाषाएँ सब हारती।

तुझे राजगद्दी देने को, जनता आज पुकारती।
आज उतारूँ आरती।

बरसात

खिड़की पर खनकाए चूड़ी,
ठाड़ी यह बरसात रातभर जागे हम।

कौंध-कौंध डर पाए बिजली,
सिरहन तन भर जाए पगली।
तन झकझोरे, मन तड़पाए,
पैनी छुरी चलाए बिजली।

भरती स्वाँस-उछाँस भगोड़ी,
मावस की यह रात, रातभर जागे हम।

अंतरमन में बिबस डराती,
क्षार-क्षार तन स्वेद कराती।
मृदु भावों की याद दिलाकर,
बीते युग की सैर कराती।

झर-झर झरती नयन असाढ़ी,
प्रिय प्रवास की बात, रातभर जागे हम।

कबिरा की बानी में रमती,
मदिरा सी ध्यानी में थमती।
नींद उड़ाती सारे जग की,
माया रमजानी में कसती।

उँगली-उँगली, पोर-पोर पर,
करती यह रनिवास, रातभर जागे हम।

मन की यह कमजोरी ठहरी,
तन तरूवर की मूक गिलहरी।
दहकी तन मन आग बनाकर,
सुनती टेर कभी मन बहरी।

संयम की उँगली पकड़े पर,
अंतर्मन बनवास, रातभर जागे हम।
खिड़की पर खनकाए चूड़ी,
ठाड़ी यह बरसात, रातभर जागे हम।



कवि परिचय

नाम	राम लखन 'अनुरागी'
जन्मतिथि	7-06-1940
शिक्षा	स्नातक
पिता	स्व0 कमला प्रसाद
वर्तमान पता	बंगला नं0 14, कटरा रोड, इलाहाबाद-211002
प्रकाश्य कृतियाँ	(1) ऋतु दर्पण (काव्य संकलन)
	(2) बरसात की शाम (नाटक)
	(3) वसीयत (उपन्यास)
विशेष	'अनुरागी' जी लगभग चालीस वर्षों से हिन्दी की ... इनकी कतिपय रचनाएं रक्षा लेखा विभागीय राजेभ... हैं। साहित्यिक आयोजनों में बड़ी रुचि लेते हैं। रक्षा ... (पेंशन) कार्यालय इलाहाबाद में वरिष्ठ लेखा पर... 2000 से सेवा निवृत्त हो चुके हैं। 1998 में भोजपुरी ... सचिव थे। इसी नाट्य मंच के माध्यम से 'बरसात ... प्रेक्षागृह में प्रदर्शन भी हुआ।

राष्ट्र-वन्दना

जय विश्व भरणि, जय वेद रूप!
जन मानस तुझे प्रणाम करे,
हिम की चोटी भी अम्बर में
उन्नत होकर हुंकार करे

पंच नदो के क्रान्ति स्वरों में
गीता के पावन ज्ञान भरे
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा
बलिदानों के गान करें

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
सब के धर्मों में कर्म बड़े,
प्रान्त-प्रान्त की भाषाओं में
बँटकर भी हम अडिग अड़े

शस्य श्यामला, सत्यबाहिनी
के आँचल में शान्ति मिले,
गंगा, यमुना, विन्ध्य, हिमाचल
से, नूतन पावन ज्ञान मिले

भारत माता की गोदी में
हैं विविध रंग के पुष्प खिले,
शीतल समीर, सागर गंभीर
प्रतिदिन प्रतिपल जय घोष करें।

कवि परिचय

नाम	शिव भजन 'कमलेश'
जन्म तिथि	22 जनवरी, 1941 ई0
शिक्षा	एम0 ए0, आयुर्वेद रत्न
पिता	स्व0 छोटे लाल
प्रकाशित कृतियाँ	(1) प्रणय के पाँव (गीत-संकलन)
	(2) गीत के गाँव (गीत-संकलन)
	(3) शब्द नहीं माने (काव्य संकलन)
वर्तमान पता	558/27-ग, सुन्दर नगर, आलमबाग, लखनऊ
	दूरभाष : 0522-2456468
विशेष	'कमलेश' जी एक जिज्ञासु कवि हैं। विक्रम शिला हिन्दी (बिहार) के साहित्याचार्य पाठ्यक्रम हेतु स्वीकृत इनके गीत संकलित हैं। चेतना, साहित्य परिषद, लख एवं सक्रिय सदस्य भी हैं। कानपुर जनपद में जन्मे साहित्य को बड़ी आशायें हैं। सरलता एवं गेयता इनके हैं। समाज में व्याप्त सम सामायिक समस्याओं पर इन चलती हैं। सामाजिक कुरीतियों पर अपनी लेखनी प्रहार करने में कवि की निपुणता सराहनीय है।

आते नूतन वर्ष

पूरा होता रह जाता है, इस जीवन का गीत।
नव आशा के नए साल भी जाते यों ही बीत।।

नित्य सवेरा होता, उगता रवि पूरब मे रोज
आशा मे खिलता रहता है अन्तर का अम्भोज
किन्तु नहीं मिल सका निरन्तर रवि-किरणों का साथ
हो जाता उत्फुल्ल अन्यथा, जीवन का जलजात

'इच्छाओं का वर्तमान' भी बनता रहा अतीत।
नव आशा के नए साल भी आते यो ही बीत।।

उपदेशों के शब्द चुने, घटनाओं का उत्साह।
सात्विकता की रचीं पंक्तियाँ, आया सहज प्रवाह
विषय वस्तु में केवल जीवन, इस पर केन्द्रित ध्यान
चाहे जोड़-जोड़ कर रखने, नए-नए उपमान।

लेकिन, जैसे यह प्रयोग भी, सिद्ध हुआ विपरीत।
नव आशा के नए साल भी, जातें यों ही बीत।।

जीवन का यह गीत अधूरा, दोहराता हूँ मौन।
बार-बार बाधक बन जाता, पता नहीं यह कौन?
आते नूतन वर्ष, साथ में लिए घात-प्रतिघात
कभी नहीं सुन्दर बन पाए, जो बिगड़े हालात

शुभ स्वप्नों के दुर्ग सुनहरे, अब तक सका न जीत।
नव आशा के नए साल भी, जाते यों ही बीत।।

हिम्मत और जुटानी होगी, सुन्दर यही उपाय।
मन की नहीं, हृदय की होगी सदा माननी राय
संघर्षों की घोर चुनौती करनी है स्वीकार
अधिकारों के मध्य, स्वत्व का रचना है संसार

तभी सफलता मिल पाएगी, निश्चित आशातीत।
नव आशा के साल अन्यथा, जाएँगे ही बीत।।

बसन्त गीत

मलय गन्धमय गलियाँ
सिहर उठीं सब कलियाँ
पाकर मादक परस मदन का, पुलकित दिग दिगन्त।
आ गया है ऋतुराज बसन्त।।

फूलों लदी लताएँ झूमीं
लिए पराग हवाएँ घूमीं
विप्रलम्भ को मुँह मटका कर–
भ्रमरों ने पाँखुरियाँ चूमीं

कच्ची उमर इमलियाँ
लिपटी हुई पिपलियाँ
मदिर सुरभि में झूम रहे हैं, साधक, सन्त, असन्त।
आ गया है ऋतुराज बसन्त।।

महुओं ने रस-घट छलकाए।
बेल-विटप लड्डू लटकाए
ऐसा असर पड़ा आमों पर–
ऋतुपति के आगे बौराए

रीझी देख जमुनिया
खुश टेसू की दुनिया
गुड़हल, सेम्हल संग पलाश भी, लगते बाँके कन्त।
आ गया है ऋतुराज बसन्त।।

सरसों पीली सेज बिछाए
बहुरंगी तितली ललचाए
कुटुक-कुटुककर रही गिलहरी
कोयल पंचम स्वर में गाए

अरूणिम हुईं पुतलियाँ
सिहरन भरी उँगलियाँ
शकुन्तला ऋतु रति बन आई, मनसिज बन दुष्यन्त।
आ गया है ऋतुराज बसन्त।।

कवयित्री परिचय

श्रीमती कमलेश श्रीवास्तव

2 जनवरी, 1942 ई0

लखनऊ

स्व0 श्री भगवती प्रसाद

स्व0 श्रीमती राम प्यारी

श्री लाल जी सहाय श्रीवास्तव

एम0 ए0

(समाजशास्त्र इतिहास) बी0 एड0

शिक्षण-हनुमान प्रसाद रस्तोगी इण्टर कालेज, सुभाष मार्ग, लखनऊ

कविता, निबन्ध, कहानी, गद्यगीत इत्यादि।

(क) आस्था के दीप (कविता-संग्रह), सन् 2000 ई

(ख) राष्ट्रीय काव्यांजलि मे सहयोगी रचनाकार

आकाशवाणी, लखनऊ द्वारा कतिपय बालोपयोगी वार्ताएँ एव उदबोधनात्मक परिचर्चाएँ।

245/22ख, भवाना सिंह, शिवाला रोड,

लखनऊ-226003, दूरभाष-0522-2240820

नारी की अर्न्तनिहित संवेदनशीलता से ओत प्रोत श्रीमती कमलेश श्रीवास्तव के सृजन मे छन्द, लय, अलंकार का इस प्रकार समावेश दृष्टिगत होता है कि स्वत. गेयता उत्पन्न हो जाती है। कवयित्री सामाजिक कुरीतियो के प्रति यथेष्ट जागरूक हैं। बेमेल राजनीति, भ्रष्टचार, दुर्बल, शोषण कुछ ऐसे सवेदनशील विषय हैं जिन पर उनका भावुक हृदय बिना लेखनी से वार किए रह नहीं पाता। माँ वीणा इन पर ऐसी ही कृपा करती रहें।

शुभ संस्कारों की बात करो

मत प्रतिशोधों की बात करो, मत प्रतिकारों की बात करो।
घातो प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारों की बात करो।।

सुख-दुख संसृति के युगल पुष्प, तम का पड़ाव दीपक तल है,
तुम वर्तमान के कर्णधार आशा की ज्योति भरो दल में,
अंधियारों का दामन छोड़ो, बस उजियारों की बात करो।
घातों-प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारों की बात करो।।

यह प्रकृति हमारी जननी है, यह प्रकृति हमारी छाया है,
इसका निर्मम दोहन छोड़ो, इसने जीवन सरसाया है,
सूरज, चन्दा, आकाश, कुसुम, कुछ ध्रुवतारों की बात करो।
घातो-प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारों की बात करो।।

उर द्वेष-ईर्ष्या का साम्राज्य, इच्छाओं के हैं अश्व प्रबल
इनकी लगाम कसकर पकड़ो, बढ़ रहीं कामनायें प्रतिपल
सत्संकल्पो की बात करो, शुभ संस्कारों की बात करो।
घातों-प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारो की बात करो।।

विध्वंसमार्ग को तज करके, उल्टी धाराओं को मोड़ो,
समता-संस्कृति के पथगामी, दिल से दिल का नाता जोड़ो,
उर शीतलता का लेप करो, मत अंगारों की बात करो।
घातो-प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारों की बात करो।।

सौभाग्य कर्म की मुट्ठी में, अधिकार कर्म का प्रतिफल है,
सोपान समुन्नय आरोहण, एका उन्नति का संबल है,
पीड़ा सहकर भी सृजन करो, मत संहारों की बात करो।
घातो-प्रतिघातों को छोड़ो, सदव्यवहारों की बात करो।।



परिवर्तन की आँधी

परिवर्तन की आँधी आयी, सत्ता के गलियारों में।
मोती चुगते कौवे देखे, निर्भय खड़े कतारो मे।।

नितप्रति गहरी होती जाती, जाति धर्म की रेखाएँ,
राजनीति ने उल्टी कर दीं, नेह मर्म की धाराएँ।
कहीं उर्वशी बनने को, उन्मुक्त फिर रही है नारी,
मर्यादा का धता बताते, नव फैशन के व्यापारी।
छीना-झपटी की समानता, मुखरित है अधिकारों मे।
परिवर्तन की आँधी आयी, सत्ता के गलियारों मे।।

अखबारों की सुर्खी से जनता, कुछ पल खुश हो लेती,
उसे पता क्या 'सुखरामों' की, भारत में होती खेती।
शासन के संरक्षण में ही, होते नित घोटाले हैं,
न्यायपालिका की देहरी पर, सत्ता के ही ताले हैं।
तूती की आवाज कौन कब, सुन पाया नक्कारो में।
परिवर्तन की आँधी आयी, सत्ता के गलियारों मे।।

पर्व और त्यौहार नाम को, हैं प्रतिवर्ष यहाँ आते,
राष्ट्रबोध, कर्तव्य पाठ को, सब मिलकर के दुहराते।
जनसेवक कुबेर बन जाते, राजकोष करके खाली,
उजड़ रहा भारत का गुलशन, किन्तु बज रही है ताली।
कीर्तिमान उन्नति का गढ़ते, देश प्रेम के नारो मे।
परिवर्तन की आँधी आयी, सत्ता के गलियारो मे।।

कवि परिचय

नाम	श्री कान्ति बोहरा
जन्म तिथि	11-02-1942
शिक्षा	एम० ए० राजनीति विज्ञान
प्रकाशित कृतियाँ	(1) उजली मैली सतरंगी चूनर
	(2) भावों का इन्द्रधनुष
	(3) गीत अधूरे रीते
सम्मान	जिला प्रशासक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा सम्मानित
स्थायी पता	मदन मंजिल, वीर मोहल्ला, जोधपुर (राजस्थान)
विशेष	श्री कान्ति बोहरा जी एक जिज्ञासु कवि हैं। देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आकाशवाणी केन्द्र जोधपुर से इनकी कविताओं का प्रसारण समय-समय पर होता रहता है। बोहरा जी का स्वभाव अत्यन्त मृदुल है।



गीत

(हिन्दी का हंस)

सहज सरल सुन्दर उड़ान लिये
हिन्दी का हंस तो उड़ता रहेगा।

पवित्र गंगा यमुना सरस्वती
हिन्दी की त्रिवेणी बहती रहे,
केरल से कश्मीर तक महकी
हिन्दी जनमानस मे बसी रहे,

अनेक भाषाओं का साथ लिये
हिन्दी का रथ तो बढ़ता रहेगा।

घर, गाँव, शहर और पगडंडी
छवि हिन्दी की मुखरती रहे,
मधुरिम ममता की खड़ी बोली
शिक्षा का माध्यम बनती रहे।

दूरदर्शन, विज्ञापन, राजकाज लिये
हिन्दी का रूप तो संवरता रहेगा।

अंग्रेज तो गये, अब यह अंग्रेजी,
दूर हटेगी, मशाल जलती रहे,
हम पढ़े-लिखे-बोले कांति हिन्दी
लोकप्रियता निरन्तर है बढ़ती रहे,

अंग्रेजी हटाने का शंखनाद लिये
हिन्दी का युद्ध तो चलता रहेगा।

सहज सरल सुन्दर उड़ान लिये
हिन्दी का हंस तो उड़ता रहेगा।।



गीत

(अर्थी के उद्गार)

दीप बुझे, उजड़े आंगन जगी हूँ,
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।

मधुर हर रिश्ते नातों से जुड़ी
समस्त निर्धन अमीरों से मिली
प्यारी तो नहीं हूँ पर अनिवार्य
लेकिन अच्छों बुरों की सगी
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।

सुखों की नहीं दुखों की पली हूँ,
यादों की व्याकुल बहती नदी हूँ,
अपरिचित सम्बल बोझ निस्वार्थ हूँ,
पाप-पुन्य ऊँच नीच से तो बड़ी हूँ।
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।।

जनम जनम के बीच सदा खड़ी
घर से मरघट यात्रा की सखी
बेबस भार ढोहती रहती निर्विकार
जीवन सफर की हाय अंतिम कड़ी
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।

हर बार दुर्भाग्य हाहाकार में उठी हूँ,
दो बांस, मूंजड़ी, कफन से ही बंधी हूँ,
माटी बने शरीर की सुनती कथाएँ
चार कंधों पर शान सहित चढ़ी हूँ।
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।।

ठाठ बाट, साज श्रृंगार कर सजी हूँ
राम नाम सत्य' सहगान संग चली हूँ
चेतन आत्मा का दान पुंज दमका
कांति प्रभु शरण की प्रेरणा बनी हूँ।
नीर पोंछ, धीर बंधाती अर्थी हूँ।

कवि परिचय

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

23 मार्च, 1942

89, शारदा सदन, सराय हसनगंज, लखनऊ

श्रीमती धर्मवती देवी, स्व0 लक्ष्मण प्रसाद श्रीवास्तव

श्रीमती मिथलेश श्रीवास्तव

एम0 काम0, एल0 एल0 बी0

केन्द्र सरकार, रक्षा लेखा विभाग मे राजपत्रित अधिकारी

सेवानिवृत्त लेखाधिकारी, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (म0 प्र0) लखनऊ

अध्ययन एवं लेखन

गीत, गजल एवं मुक्तक काव्य मे भावाभिव्यक्ति।

1) गीत-कलश (गीत सग्रह), 2) प्रदक्षिणा (कुण्डलियाँ-दोहा सकलन), 3) प्रणम्या (काव्य कृति)

1) वीणावादिनी ! वर दे!, 2) दोहे समकालीन, 3) समय की शिला पर, 4) कविता : बदलते सदर्भ, 5) कविता गूँजते स्वर, 6) राष्ट्रीय काव्यांजलि

1) गीत-गजल सग्रह, 2) मुक्तक काव्य, 3) नव गजल (सहयोगी कृति), 4) दोहा संग्रह (सहयोगी कृति)

राष्ट्रीय काव्यांजलि, नमामि रामम

काव्य की छन्द बद्ध गेयता के सशक्त हस्ताक्षर श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव मूलतः श्रृंगार के कवि हैं। अपने प्रिय के साथ ही यह "एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक मैं जलाऊँ" के पक्षधर रहे हैं। छोटे-छोटे मुहावरो की सहज प्रयुक्ति कवि की अपनी विशेषता है। माँ वाणी से प्रार्थना है कि कवि साहित्याकाश मे दैदीप्यमान सूर्य जैसे चमके।

3/158, विकास नगर, लखनऊ-226022

दूरभाष-0522-2768064

एक आकाश है एक पाताल है

सोच भी है अलग, चाल भी है अलग,
भिन्न आचार है, भिन्न व्यवहार है।
दूरियाँ इस कदर, सेतु कैसे बने,
एक आकाश है, एक पाताल है।।

आपसी द्वंद्व का शोर इतना बढ़ा
स्वप्न देखे कई, आँख पर खुल गई।
जो इबारत लिखी, प्रीति के गाल पर,
बह रहे आँसुओं से, इधर धुल गई।
किन्तु दर्पण रहा बेखबर, ये खबर,
व्यर्थ सब हो गया, साज-सिंगार है।।

देखकर तितलियों की कतारें कई,
खिलखिला कर सभी फूल हँसने लगे।
और हम थे अकेले बियाबान में
लपलपाते विरह-सर्प डसने लगे।
कोशिशें सब विफल सिसकियाँ भर रही,
बन्द दिखता हृदय का मिलन द्वार है।।

ईंट गारा धरा का धरा रह गया,
प्रीति प्रासाद की नींव ही हिल गई।
राह तकते, उमरिया गुजर तो गई,
आस की हर लड़ी, धूल में मिल गई।
हाल बेहाल है, खत्म हो, कब, सफर,
टूटने अब लगा, श्वांस का तार है।।

तुम मेरे अपने

अंतरंगता अनन्यता के घन हो रहे घने।
मुझको भले पराया समझो, तुम मेरे अपने।।

शब्द नहीं हैं शब्द कोश में, वर्णन कर पाते,
अन्तर्मन की अभिलाषा, तुम काश! समझ जाते,
रोम-रोम पुलकित हो जाता, प्रेम पगे सपने।

अतस की गहराई मापे, ऐसा यंत्र नहीं,
प्रेम-उदधि की विमल उर्मियाँ, क्या अन्यत्र कहीं,
कर न सका अनुमान कदाचित, मिले नहीं नपने।

सपने, सपने रहे किन्तु दिल सचमुच टूट गया,
तुम तो रूठे थे ही, अब तो जग भी रूठ गया,
एब बावला और हो गया, कहा यही सबने।

दिन बीते कुछ बात नहीं, पर, सदियाँ बीत गईं,
द्वंद्व न मिट पाया, अनुरंजित नदियाँ रीत गईं,
प्रत्याशा के कमल खिले हैं, शायद बात बने।

कुछ तो पाप-पुण्य के रगड़े, रोड़े अटकाते,
कुछ, तुमको संकोच हो रहा, मुझको अपनाते,
एकाकार न तन-मन होता, यत्न किए कितने।

डूब रही नौका जीवन की, ढूँढ रही तिनके,
लगता, अब तो लगे बिखरने, श्वासों के मनके,
सकल समर्पण की अनुबेला, आँख लगी झपने।
मुझको भले पराया समझो, तुम मेरे अपने।।

कवि-परिचय

नाम	सुविष्ट नारायण सिंह
जन्म तिथि	6 अगस्त, 1942
जन्म स्थान	ग्राम-अवनी, पोस्ट, मकड़ी कला (मऊ) जिला-आजमगढ़
पिता	स्व0 रामपति सिंह
व्यवसाय	सेवा निवृत्त व0 लेखा परीक्षक प्रधान रक्षा लेखा नियंत्रक (पें0) कार्यालय इलाहाबाद
शिक्षा	स्नातक
वर्तमान पता	म0 न0 134डी/1ए, अमन्त नगर, अबूबकरपुर, धूमनगंज, इलाहाबाद
विशेष	श्री सुविष्ट नारायण सिंह उभरते नए हस्ताक्षरों में पत्रिकाओं में इनकी कविताओं का प्रकाशन हुआ। इनमें कण्ठ-माधुर्य खूब है। धार्मिक प्रवृत्ति के हैं आकंठ भक्ति भाव से ओतप्रोत रहते हैं इनका साहित्य की वन्दना में ही नत, मगन हैं।

निष्ठा

मैं चाहूँ तुम बसे रहो, मेरे अन्तस में प्रतिपल।
जिससे मन मे इष्ट प्रेम भी, बहे सरित भी कल-कल।
मन मतवाला बना रहे, तेरे नाम की दुनियाँ मे।
इतर कर्म नहि ध्यान मे आये, खो जाऊँ तव कर्मों मे।
भाये तेरी छवि नयनों में, तुमको ही सदा निहारूँ।
बनो तुम्ही सर्वस्व हमारे, तन मन धन सब तुम पर वारूँ।
प्रीति-रीति औ नीति न जाने, हम अबोध अज्ञानी।
तुम बिन कौन सिखाये हमको, तुम सुजान विज्ञानी।
चचल-चित नहिं वश में मेरे, करता है अपनी मनमानी।
गुन-अवगुन का भेद न जानत, पागल-पतित अधम अभिमानी।
स्वाति-नीर की बूँद का प्यासा, पीव-पीव कर रहा पपीहा।
और किसी भी चाह न उसको, वही है उसके लिए मसीहा।
सीप समुन्दर में मुँह बाये, उसी बूँद की बाट जोहती।
जाग रही दिन-रात लिए, आतुरता बनने को मोती।
दोनो मिल सन्देश दे रहे, एक निष्ठ बन जाने का।
पूर्ण समर्पण ही उपाय है, इस जग मे कुछ पाने का
प्रभु ! मनो कामना बस मेरी, तुझमें विश्वास अटल हो।
इष्ट प्राणता से अनुप्राणित, अन्तर्मन में भक्ति अचल हो।
मानवता का बनूँ पुजारी, हिंसा-इर्ष्या द्वेष न आवे।
प्रेम पूर्ण जीवन हो अपना, अहं तनिक भी छू न पावे।
निष्ठा तेरी बनें हमारे, जीवन का अनुपम आधार।
आनुगत्य तुम्हारा हो अपने, जीवन की नौका का पतवार।
कृति संवेग लिए जीवन मे, तेरे पथ पर बढ़ते जाये।
तेरी श्रद्धा का सम्बल ले, अविचल गति से चलते जाये।

कवि-परिचय

नाम	कैलाश अग्रवाल "समीर"
जन्म-तिथि	12 अक्तूबर 1942 ई०
शिक्षा	साहित्य रत्न
पिता	श्री धूरे लाल जी अग्रवाल
जन्म-स्थान	[illegible], भोपाल (मध्य प्रदेश)
स्थायी निवास	ग्राम-ओल, जनपद-मथुरा (उत्तर प्रदेश)
वर्तमान पता	36, विवेकानन्द नगर, झाबुआ (मध्य प्रदेश)
	दूरभाष : 07392 43834
प्रकाशित कृतियाँ	(1) मेरी प्रेरणा
	(2) [illegible]
	(3) आराधना
प्रकाश्य कृतियाँ	(1) [illegible] के दोहे
	(2) गीतांजली
विशेष	'समीर' जी हिन्दी के उदीयमान कवि हैं। वे कई साहित्यिक स सम्बद्ध हैं। इनकी अधिकांश रचनाएं अपनी सहज भावों की से पाठकों के हृदय को अनुरंजित करती हैं। देश के वि पत्रिकाओं में इनकी रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है।

गीत

रुक मुझको गीत सुनाने दे
जो बात है उसे उठाने दे,
कसमो वादो के सौदों मे
कसमो को आज निभाने दें.

यह मलयानिल चन्दन खुशबू
यह तन केसर से मला हुआ,
है आज गाज गिरने वाली
सौन्दर्य गाल पर ठला हुआ.

तुम मौन रहो बस इतना ही
कहता हूँ गीत सुनाने दे.

रच दो रच दो हथेली में मेहदी
पांवो मे पायल स्वर वाली,
हाथों में कंगन खनक रहे
पर नयन तेरे खाली-खाली.

मृगनयनी मुँह ना उधर फेर,
कजरा तो मुझे लगाने दे.

मेरी सत्ता से दूर रही
कितनी सदियो के बाद मिले,
मेरे इस मन के कानन मे
मुरझाए फूल थे आज खिले.

यदि तू राधा बन आए तो,
कान्हा मुझ को बन जाने दे.



गीत

कहाँ परदेशी मीत
नहीं सावन के गीत,
अब रोती है प्रीत
चुभती मन में फाँस,

जाकर यूँ परदेस
नहीं भेजा संदेस,
मन उठता है क्लेश
क्या ले लें सन्यास,

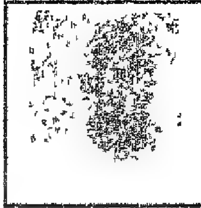
ताप देता अनंग
सुधियाँ बन गईं पराग,
स्वप्न सब हुए भग
कौन खोले इतिहास

मन बढ़ती है पीर
साँसे होती अधीर,
ना बहता 'समीर'
वन जलते पलास.

आजा गैल ओर गाँव
कहीं धूप कहीं छाँव,
आजा बहकते हैं पाँव
ये रिश्ते हैं खास.

मेरे जीवन परयन्त
क्या ना आएँ कंत,
सखी बितेरी बसन्त
प्राण हो गए हताश

कवि परिचय



नाम	परमात्मा स्वरूप 'भारती'
जन्म-तिथि	30-07-1943
शिक्षा	स्नातक
पिता	स्व0 गोविन्द राम गुप्ता
वर्तमान पता	चतुर्थ/14, गंगा-विहार, तोपखाना बाजार न्यू कैण्ट, इलाहाबाद
सहयोगी प्रकाशन	(1) जय भारती (2) कल्याण काव्य-कलश (3) नील मणि (4) कविता गूंजते स्वर (5) पृथ्वीपुत्र (6) नई शती के नाम (7) झरोखा-2000 (8) धरती और आकाश (9) हे मातृ भूमि भारत (10) नमामि रामम (11) कविता हस्तलिपि एव हस्ताक्षर (12) इन्द्र धनुष (13) गंतव्य (14) लोकगीत कविता
सम्मान	(1) अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, चांदपुर बिजनौर से 'साहित्य श्री' की उपाधि (2) हैदराबाद (आँध्र प्रदेश) से 'काव्य महारथी' की उपाधि (3) साहित्य-साधना मंच, बरेली द्वारा सन् 1999 मे सारस्वत-सम्मान (4) राजेश्वरी प्रकाशन गुना (मध्य प्रदेश) द्वारा पृथ्वी-पुत्र सम्मान (5) प्रवर्तन इलाहाबाद द्वारा "कवि श्री" से सम्मानित। (6) साहित्यिक सांस्कृतिक, कला संगम अकादमी, परियावा, प्रतापगढ़ द्वारा हिन्दी गरिमा सम्मान-2003
प्रकाश्य कृतियाँ	(1) ख्याल (गजल-संग्रह) (2) मुक्तकावली (मुक्तक-संग्रह)
सम्पादित प्रकाशित कृति	'प्रश्न'
विशेष	'भारती' जी जीवन की प्रबोध बेला से ही मा सरस्वती की साधना मे संलग्न हैं। इनकी प्रारम्भिक रचनाए श्रृगार-परक और यथार्थ-परक हैं तथा परवर्ती रचनाओ में दार्शनिकता की झलक दिखाई पडती है।



सन्नाटे

सन्नाटों ने गलियारे नीरव कर डाले
कोलाहल के पाँव कहाँ अब टिक पाते हैं

भीड़ भरी अनुगूँज लिए फिरती शहनाई
चक्रों के दुष्चक्र फँसी कितनी रचनाएँ
आडम्बर ने सत्य सेतु स्वाहा कर डाले
नियति नटी के नृत्य तांडव बन जाते हैं

अविश्वास विश्वासों की चादर खींच उतारे
शील भटक अश्लील के द्वारे हाथ पसारे
दीप बुझे में कौन नेह की बाती डाले
झंझा जब आघात भयानक कर जाते हैं

तथ्यों को झुठलाए बौना झूठ यहाँ पर
पग पग पर नव चक्रव्यूह बनता निशि वासर
है अभिमन्यु फँसा यहाँ इसे कौन निकाले
सभी यहाँ कौरव सेना के गुण गाते हैं

अहम् बीच जिज्ञासा पगली निपट अकेली
व्यक्ति समझता नहीं समय गति जटिल पहेली
महिमा मंडित स्वार्थ कहाँ कर्त्तव्य सम्भाले
द्वेष भाव अतिरंजित है मन डर जाते हैं

कोलाहल के पाँव कहाँ अब टिक पाते हैं।

आस्था

आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती
झँझावातो के नगर मे दृढ़ जले नित नेह बाती
आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती

ऐसा लगता है कभी इस लौ की यह अन्तिम चमक है
थरथराती जलती बुझती दीप की अन्तिम दमक है
पर निराशा के भँवर को चीर लौ फिर जगमगाती
आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती

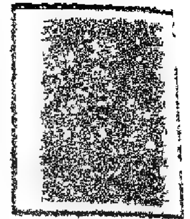
अवश पर वश मे सदा ही प्राण-पण हो चलते रहना
जिसके नंगे पाँव काँटों से बिधे पर बढ़ते रहना
दूर दिखती मन्जिलों की रोशनी उसको बुलाती
आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती

इस जगत के चक्रव्यूह में कौन फँस के बच सका है
कौन रचनाकार की रचना के सम्मुख उठ सका है
प्राच्य से रवि रश्मि रमणी नित्य ही जग को रिझाती
आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती

देह दैहिक भोग के परिवेश की आसक्ति है
मोहनी माया के मोहक योग की अनुरक्ति है
कामना हर इक गणित की मूलधन को है बचाती
आस्था लघु दीप की बहती पवन को कहती जाती



कवि-परिचय



नाम	लालजी तिवारी 'लाल'
पिता	[illegible] तिवारी
पता	[illegible] पुर
	पोस्ट- [illegible]
	जनपद- [illegible]
जन्म तिथि	[illegible]-11-1943
शिक्षा	स्नातक
प्रकाश्य कृतियाँ	1) [illegible] (काव्य संकलन)
	2) [illegible] (काव्य संकलन)
विशेष	'लालजी एक जिज्ञासु कवि हैं। इनकी [illegible] संघर्षपूर्ण जीवन की [illegible] होती है। [illegible] पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाओं का प्रकाशन होता रहता है। स्थानीय कवि गोष्ठियों में [illegible] आमंत्रित किये जाते हैं। स्थानीय संस्था [illegible] द्वारा 'कवि [illegible]' उपाधि से सम्मानित भी हुए हैं।

हे गुरू वशिष्ठ

हे गुरू वशिष्ठ हैं कहाँ राम,
है कर्ण कहाँ हैं परशुराम,
है पार्थ कहाँ गुरू द्रोण कहो,
क्या भूल गये तुम सभी नाम ।।1।।

तेरी शिक्षा मे शक्ति नहीं,
शिष्यों मे अब गुरू भक्ति नही,
गुरूकुल परम्परा में अब तो
तुम दोनो की अनुरक्ति नहीं।

तुम बेच रहे विद्या अपनी
वह खोज रहा नयनाभिराम ।।2।।

एकलव्य बहुत मिलते अब भी,
जो नाम अमर करते अब भी,
तुम काट न लों ऊँगली उनकी
इस बात से वे डरते अब भी,

वरना मिट्टी की प्रतिमा को
पूजते वे अब भी सुबह- शाम ।।3।।

विद्या जो पढ़ाई है तुमने,
जो राह दिखाई है तुमने,
मिट गया देश से सदाचार
क्या रीति सिखाई है तुमने।

भोगेगी सदियो तक पीढ़ी,
पाओगे तुम भी कुछ इनाम ।।4।।



करें ?

खूँख्वार दुश्मनों की परवाह नही थी,

अब दोस्त दगाबाज़ हो गया तो क्या करें?

चोरो की घात से कभी आघात ना लगा,

भाई ही चालबाज़ हो गया तो क्या करे?

मतलब के सभी यार थे अपने भी पराये भी,

बेटा भी वही आज हो गया तो क्या करें?

जिस साज से महफ़िल में मेरा रंग जमा था,

वह साज़ बे आवाज़ हो गया तो क्या करे?

हँसते हुए चेहरे के पीछे जो दर्द था

जाहिर वो दिल का राज़ हो गया तो क्या क

संसार भर को रोशनी देता रहा है जो,

जाहिल वही समाज हो गया तो क्या करे?

पर्वत भी हिला देता था जो जोश में आकर,

काहिल वही जाँबाज़ हो गया तो क्या करे?

आराधना में मेरे कोई कमी न थी,

आराध्य ही नाराज़ हो गया तो क्या करे?

इंसान और ईमान की कीमत तो घट गई,

मँहगा थोड़ा अनाज हो गया तो क्या करें?

पाश्चात्य सभ्यता में हम इतने रंग गये,

खत्म लाज और लिहाज़ हो गया तो क्या क

जिस भ्रष्ट आचरण से हमें थी कभी घृणा,

वही देश का रिवाज़ हो गया तो क्या करे?

ऐ "लाल" अपनी बेबसी पर तू हो मत उदास,

ठण्डा वक्त का मिजाज़ हो गया तो क्या करें?

कवि-परिचय

जटा शंकर 'प्रियदर्शी'

20 जुलाई, सन् 1945

स्नातक; साहित्याचार्य

स्व0 सुखदेव प्रसाद मिश्र

(1) मुक्ता-कण (काव्य-संकलन)

(2) क्रान्ति-ज्योति (खण्ड काव्य)

(1) नव गीतिका (शृंगारिक रचना)

(2) श्रद्धा-कण (भक्ति-परक रचना)

(3) कल्पतरु (गीत-संकलन)

(4) कालचक्र (गीत-संकलन)

(5) राम-दूत (खण्ड काव्य)

2/8/139 डी/5 बी रसूलाबाद (तेलियरगंज) इलाहाबाद

दूरभाष : 2445200

प्रियदर्शी जी मूलतः गीतकार हैं। इनकी कुछ रचनाएँ यदि आधुनिक संदर्भों से जुड़ी हैं तो कुछ आध्यात्मिक ऊर्ध्व चेतना परक हैं। सरलता एवं गेयता इनके काव्य की विशेषताएँ हैं। इनमें कण्ठ-माधुर्य खूब है। इसीलिए उ0 प्र0, म0 प्र0, छत्तीसगढ़, बिहार, पंजाब, और हिमाचल प्रदेश के कई जनपदों में काव्य-पाठ कर चुके हैं। बीस वर्षों से इनकी कविताओं का प्रसारण आकाशवाणी केन्द्र इलाहाबाद से हो रहा है। प्रयागीय संस्था 'प्रवर्तन' द्वारा 'कवि श्री' उपाधि से सम्मानित भी हुए हैं।

सहकारी अस्तित्व जहाँ है......

मिलजुल कर रहने से ही तो मिलता है सुख अन्तर्मन को

पाया है जग मे जीवन जो मिलजुलकर ही रहना होगा
और परस्पर पीर बाँटकर सुख-दुख भी तो सहना होगा
साथ-साथ चलने से दुर्गम पंथ सहज लगने लगता है
इससे प्रेम, दया को बोकर नया अर्थ दो मृदुल सृजन को

बिखरे खैर खजूरों से कब रेगिस्ताँ को छवि मिल पायी?
सघन उगे तरुओ से कितनी शोभित होती है अमरायी
तू खुद ही अपने नयनों से देख जरा यह तारामण्डल
कितना धनी बना देता है रोज रात मे नील गगन को

सहकारी अस्तित्व जहाँ है वहीं अभ्युदय हो पाता है
जहाँ कलह, विघटन की सत्ता विलय वहीं सो हो जाता है
इससे नफ़रत हिंसा छोड़ो त्याज्य समझ उसको प्यारे नर
और देख फिर पायेगा तू वसुन्धरा पर दिव्य भुवन को

खोये साजन पर, खो न नयन

री, अश्रु बहाने से भी क्या बीते निशि वासर कभी फिरे?
वर्षा में लहराते पोखर क्या ग्रीष्म काल में रहे भरे?
कब लौट सकी यमुना सरिता जब अगम सिन्धु की ओर चली?
जो जीर्ण हो गये दृढ़ मकान फिर क्या वे भू पर नहीं गिरे?
लौकिक उन्नतियो का जग में होना न कभी क्या अन्त पतन?
खोये साजन पर, खो न नयन?

जो भी इस जग में आया है दिन एक उसे जाना होगा
हँसते-गाते उन फूलों को रज-कण में मिल जाना होगा
तरु की डाली पर लटक रहे गर्वीले गदराये जो फल
कल छूट डाल से उनको भी नीचे भू पर आना होगा
कर सका न जग मे कोई भी इस जन्म-मरण का उल्लंघन
खोये साजन पर, खो न नयन

सागर में बहते दारु युगल मिलकर जैसे छुट जाते हैं
वैसे ही इस नश्वर जग में क्षण-भंगुर सारे नाते हैं
नर अधम या कि दृढ़ वीरव्रती आजन्म नहीं होता कोई
गुण-दोष बुद्धिकृत कर्म सदा सुख-दुख की प्राप्ति कराते है
इस तन में बुद-बुद सा रहकर तू व्यर्थ न कर क्रन्दन, रोदन
खोये साजन पर, खो न नयन

कवि परिचय

नाम	**विप्लव**
पिता	श्री दाऊ कृष्ण शर्मा
जन्मतिथि	30 जून, 1947
शिक्षा	एम0 एस0 सी0 (कैमिस्ट्री), बी0 [illegible]
सम्प्रति	राम गंगा कमाण्ड परियोजना में मृदा रसायनज्ञ
प्रकाशित कृतियाँ	वृक्ष मित्र हैं (कविता संग्रह)
प्रसारण	'थकान' एवं द्विविधा कहानी आकाशवाणी से प्रसारित
अन्य प्रकाशन	'रोशनी की तलाश' 'कविता गूँजते स्वर, नई सदी के नाम, रा काव्यांजली, हे मातृभूमि भारत आदि कविता संग्रहों में कवितायें प्रका स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती पर अल्मोड़ा की साहित्यिक स्मारिक कवितायें और 'पहली कहानी' प्रकाशित। वर्तमान के प्रथम दौरान चाहिये 'क्या हमारे दिन फिरेंगे' आदि नाटकों का लेखन, निर्देशन मंचन किया।
अप्रकाशित	पीछे लौटती उम्र (उपन्यास)
स्थाई पता	565/115, पूरन नगर, आलमबाग, लखनऊ
विशेष	श्री विप्लव जी एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। काव्य के अतिरिक्त र साहित्य, पेंटिंग तथा ज्योतिष में इनकी विशेष रुचि है। यथा नाम र गुण उक्ति को चरितार्थ करते हुए श्री विप्लव की लेखनी से सामाि विसंगतियों पर प्रहार उनकी कृतियों में झलकता है।

टूटते संवेदन

नभ नीरव सी छाँव सघन है
हृदय हृदय बसते निर्जन हैं

अवचेतन संसार भरा है
सुधियो के कलरव, सपनों से

अन्तर्मन विस्तार घिरा है
कोहरिल इच्छा तुहिन कणो से

लिखी पराजय कदम कदम है
डगर डगर गहरे दुर्गम हैं

हर चिन्तन, आकाक्षा, आशा
संध्या, उषा की अरुणाई

घायल सी कल्पना लौटकर
फिर वापस पिंजरे मे आई

ऋतुओ-ऋतुओं अधर जलन है
गगन-गगन गूँजे गर्जन हैं

उगा रही उर्वरा भावना
अपनत्वो के कल्पित मधुवन

अनुभूति व्यथाये पतझड़ सी
बचे टूटते से संवेदन

हर धड़कन हिम सी सिहरन है
दृष्टि-दृष्टि तीखे वर्जन हैं।



हिम के शिलाखण्ड

कोहरे मन पर भर आयेंगे
एकान्त विकल डर आयेगा
नयनो में हिम के शिलाखंड
सपनों के नगर डुबायेंगे

किस पर खोलेंगे मन अपना
खुद ही सह लेंगे दुख अपना
अगले पल के अँधियारे से
सहमे न उबर पायेंगे

सब कुछ बाँटा है दीन हुये
समझौतो से भी क्षीण हुये
असफलता के तूफानों में
हो किस पर निर्भर आयेंगे

परिचय सारे हैं मौन खड़े
अब किसे पुकारें, कौन सुने
देवता बने सब पत्थर दिल
विश्वास कहाँ पर लायेंगे

सपने भी तो अब शेष नहीं
आशाओं के उन्मेष नहीं
इन दिशा रहित कदमों से अब
बढ़ कौन डगर पर जायेंगे



कवि परिचय

नाम	**चन्द्रपाल सिंह 'चन्द्र'**
माता	स्व0 श्रीमती तुलसी देवी
पिता	श्री राम सेवक सिह
जन्मतिथि	1.10 1947
जन्मस्थान	ग्राम-जरारा, डाकघर, मुसाफा, तहसील-बिन्दकी, जनपद-फतेहपुर
शिक्षा	एम0 ए0 (अंग्रेजी साहित्य), बी0 एड0
व्यवसाय	प्रधानाचार्य, सोहनलाल इण्टरमीडिएट कालेज, राजेन्द्र नगर, लखनउ (उ0 प्र0)
प्रकाशित कृतियाँ	लोचन नीर भरे, जगती नही चेतना अगीत काव्य के अष्टादश पथी, वीणा वादिनी वर दे। जगे विश्व बन्धुत्व कविता · बदलते सदर्भ, कवित्त। · गूँजते स्वर, नमामि रामम्, प्रतिष्ठा प्रभा, बन्द झरोखे (कहानी संग्रह) आदि सकलनों के एक सहयोगी रचनाकार
प्रकाश्य	देश के महान पुरुष, कहानी संग्रह, गीत, मुक्तक, दोहा आदि।
सम्पर्क	ई0 4843, सेक्टर-12, राजाजीपुरम, लखनऊ-17 आवासीय फोन-2415216
विशेष	श्री चन्द्र जी एक सरस गीतकार हैं। साहित्य के अतिरिक्त समाज सेव में इनकी विशेष रुचि है।

'मैं हूँ अमरबेल दुखदायी'

मेरे अपने जीवन का क्या मोल? सोचती आयी।
जिस पर निर्भर रही उसी का खून चूसती आयी।।
मैं हूँ अमरबेल दुखदायी।।

मैं वृक्षो की डाल-डाल पर, अपनी जड़े गड़ाती।
सीने मे चढ़कर तरुवर की, जीवन-राग सुनाती।।
चूस-चूस कर रक्त बदन का मरणासन्न कर देती।
हँसती हुई जिंदगी का मैं सुख-सकून हर लेती।।
कितनी निर्मोही-निरीह! यह सोच-सोच पछतायी।।

सोच रही हूँ विधि-विधान का कैसा लेखा-जोखा।
जिधर देखिए उधर जिन्दगी में धोखा ही धोखा।।
मैं भी एक अंग रचना की, अपनी कीमत आँकू।
जीवन जीने की खातिर, औरो का दामन झाँकूँ।।
देख-देख नीरस तरुणाई, पीड़ा उर भर आयी।।

कैसी रचना रची विधाता ने यह समझ न पायी।
सदा दूसरों की खुशियों में, मैंने आग लगायी।।
क्या अच्छा? क्या बुरा? नियति ही इसको जाने बूझे।
मुझको तो अपने ही जीवन का अस्तित्व न सूझे।।
यह शाश्वत रचना विधान जग, काल चक्र पर-छायी।।

'देश की तुम शाश्वत पहचान'

देव पुरुष! तुम युग निर्माता, कण-कण मे द्युतिमान।
पूज रहा है तुम्हे प्रेम से सारा हिन्दुस्तान।।
देश की तुम शाश्वत पहचान।।

आज तुम्हारे आदर्शों का सत् अभिनन्दन होता।
सत्य-अहिंसा की राहो पर प्रेम अंकुरण होता।।
'बापू' बिना तुम्हारे लगती धरती सजल अधूरी।
लेकर जन्म पुनः भर जाओ, माँ की माँग सिंदूरी।।
राष्ट्रपिता तुम, भारत माँ के अमर सपूत महान।।

दिल की हर धड़कन कहती है, सुनिए स्वर्ग प्रवासी।
स्वतंत्रता, स्वच्छंद हो गयी, छायी गहन उदासी।।
डाल-डाल पर सुमन-सुकलिका, गुमसुम है मन मारे।
सोच रही सपनों की बगिया-उजड़ी कौन सँवारे।।
उघर गयी अस्मिता, बदन से उतर गया परिधान।।

सौतन बनकर आज देश में, अंग्रेजी विष घोले।
सदा-सुहागन हिन्दी माँ के, सर पर चढ़कर बोले।।
"मैं अन्तर्राष्ट्रीय जगत की एकमात्र जग माता।
मेरे बिना नहीं रह सकता, जगती तल जग नाता"।।
पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण सभी करे यशगान।।

कवि परिचय

नाम	कृष्ण दत्त मिश्र 'कृष्ण'
जन्मतिथि	01-11-1947
शिक्षा	एम0 ए0, बी0 एड0, एल0 एल0 बी0, साहित्य रत्न
पिता	श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र
जन्मस्थान	शाहपुर, लहरपुर, सीतापुर (उ0 प्र0)
कृतियाँ	प्रकाशित– (1) चेतना के गीत (2) गीत राष्ट्र के (3) काव्याकाश (4) राष्ट्रीय काव्यांजलि प्रकाश्य– (1) ज्योति कलश (गीत संकलन) (2) आओ करें विचार (निबंध संग्रह) (3) आज़ादी के 60 वर्ष (एकांकी)
सम्पर्क सूत्र	554/144 जी, विशेश्वरनगर, पो0 आलमबाग, जिल दूरभाष-0522-2456203
विशेष	'कृष्ण' जी एक ललित गीतकार हैं। इन्होंने अपने जी को गहराई से देखने की कोशिश की है और जो कुछ का जामा पहनाने की कोशिश में प्रयासरत रहते हैं। इनके काव्य की विशेषताएँ हैं।

गीत "जय दुन्दुभी बजायेगी।"

स्वार्थ सिद्धि में वृद्धि धरा अब रंच नहीं सह पायेगी।
भ्रातृ-भावना, समता, ममता, जय दुन्दुभी बजायेगी।।

स्वेद लहू से जिसने सींची, उपवन की डाली-डाली।
बना पराया उपवन मे ही, निर्वासित दिखता माली।

भाई-भाई टकराव धरा अब, और नही सह पायेगी।
भ्रातृ-भावना, समता, ममता, जय-दुन्दुभी बजायेगी।।

जहाँ खुले अम्बर मे खग को, उड़ने का अधिकार नही।
और पेट की क्षुधा मिटाने, चुगने का अधिकार नही।

विहग-वृन्द में भूखी चिड़िया, क्या सद्भाव जगायेगी।
भ्रातृ-भावना, समता, ममता, जय दुन्दुभी बजायेगी।।

बहुत हो चुका अरमानों का, कब तक गला दबायेगी।
जाति, धर्म के उलझाओं में, कब तक छलती जायेगी।

मनुज मात्र से भेद धरा अब, और नहीं सह पायेगी।
भ्रातृ-भावना, समता, ममता, जय-दुन्दुभी बजायेगी।।

जला ज्योति समभाव-सृजन की, अब अंधियार मिटाना है।
दूर करे दिल से दिल को जो, वह अवरोध हटाना है।

मनुज, मनुज के लिए जिये तो, नई सुबह फिर आयेगी।
भ्रातृ-भावना, समता, ममता, जय-दुन्दुभी बजायेगी।।

गीत : "सच तू बड़ा महान है।"

मानव-जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।
यह अवसर जो मिला तुझे है, एक बड़ा वरदान है।।

जल चर, थलचर, नभचर की गति, सब कुछ तेरे
ज्ञान और विज्ञान-प्रगति-गति, भी अब तेरे साथ है।
विश्वबन्धुत्व का भाव जगा दे, इसमें तेरे मान है।
मानव-जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।। 1

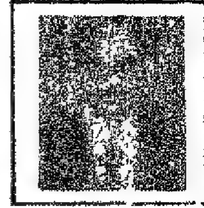
धरती तो हम सब की माँ है, इसे सभी से प्यार है।
छोटे-बड़े सभी जीवों को, जीने का अधिकार है।
तू प्रभु की सर्वोत्तम रचना, जगती की तू शान है।
मानव-जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।। 2 ।।

ईर्ष्या, द्वेष, कपट, छल का अब, जग से काम तमा
क्षमा, दया, समता, ममता का, फिर से जग में नाम
त्याग, प्रेम, सहयोग, कर्म में, तेरे कौन समान है।
मानव-जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।। 3

अन्तस् का तम अहं नष्ट हो, पुनि स्नेह विश्वास बढ़े।
सबके हित की करो कामना, मनुज दिवा सोपान चढ़े।
नैतिकता ही मानवता की, सदा बनी पहचान है।
मानव जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।। 4 ।।

यह अवसर जो मिला तुझे है, एक बड़ा वरदान है।
मानव-जीवन पाया तूने, सच तू बड़ा महान है।।

कवि परिचय



नाम	डॉ0 राजेन्द्र जयपुरिया
जन्मतिथि	13 अगस्त, 1948 ई0
शिक्षा	एम0 ए0 (हिन्दी), पी0 एच0 डी0
निवास स्थान	जयपुर, (कोरापुट) उड़ीसा
प्रकाश्य कृतियाँ	(1) सोपानो के स्वर (काव्य संकलन)
	(2) नीम की छाया (काव्य सकलन)
	(3) त्रिपथगी (कहानी संग्रह)
सम्प्रति	रीडर एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
	विनायक आचार्य कालेज, ब्रह्मपुर, (गंजाम)
	उड़ीसा, 760006 दूरभाष-0680-211691
विशेष	डॉ0 राजेन्द्र जयपुरिया हिन्दी के स्थापित साहित्यकारो मे से है। इनकी रचनाएँ समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा मानद-उपाधियों से सम्मानित भी हैं। साहित्य की कई विधाओं मे कृतिकार के रूप मे डॉ0 जयपुरिया की उपलब्धियाँ सराहनीय हैं। हिन्दी जगत को भविष्य में इनसे बहुत आशा है।

ओ सखा, एकान्त!

ओ सखा, मेरे अनन्य एकान्त!
मुझसे यह क्या कराये चले हो?

छूट रही हर डगर की धूल,
चिपकी भाल से बन कर भूल।
खिजा रही शूल बन कर मुझे-
रिझा रही वही बन कर फूल।।

चंचल लहरों का ही बल पाकर,
सुधि सागर मे डुबोये चले हो।

तिमिर में तनते रहे दृग ये,
लालायित आलोक-पुंज में।
ढूँढ रहा अस्तित्व हर शब्द-
विदेह-वाटिका के कुंज मे।।

अनुगूँज में निज अभिव्यक्ति हेतु,
अरण्य में ही गंवाये चले हो।

हुआ न पंकिल पुष्प तो कभी,
शोभित अलक में अबीर संग।
हुए विदा पलक संपुटों से-
नीर बन पाहुन स्वप्न अनंग।।

युगलाधरों को वेणु के बदले,
रेणु-रंग से सजाये चले हो।
ओ सखा.....................



सदियों की रीत

हो चली वसन-हीना, विगत सदियों की रीत!

मूढ़ मात्र सा माँझी,
तब निहारे अकेला।
सरित पुलिन पर ही जब-
डूबे उसका भेला।।
मंझधार अकुलाता, लगता अनिल भयभीत।

आज रहा संभाषण,
काया शब्द की तौल।
मध्य आत्म-लुंठन के-
क्या श्वांस का ही मोल?
आड़ के झरोखे में, अरे! अड़ गया अतीत!

होगा आस्थाओं का,
अब तो हर पाँव गौण।
आशाओं का चहकता-
होगा हर गाँव मौन।।
आँसू बनते काजल औ' नयन गाते गीत!

झर गई अंजुरी से,
सकल शपथों की वेणु।
शूल हैं बोने लगा-
अब स्वप्न का ही रेणु।।
हो चली है नीलाम, हाय! चिथड़ाई प्रीत!



कवयित्री-परिचय

नाम	डॉ0 सुषमा [illegible] 'सौम्या'
जन्म तिथि	11-1-19[illegible]
शिक्षा	एम0 ए0, पी0 एच0 डी0, [illegible]
पिता	स्व0 श्री कृष्ण सक्सेना
प्रकाशित कृतियाँ	(1) वृक्ष मित्र हैं।
	(2) रोशनी की [illegible]
	(3) सांस्कृतिक [illegible]
अप्रकाशित कृतियाँ	(1) आराधना [illegible]
	(2) यशस्वदेश
	(3) राष्ट्रभक्ति पूज्य है।
	(4) कुछ तो बोलो हरि
	(5) धूप की पहली किरण
सम्मान	ग्रीष्मोत्सव समारोह अल्मोड़ा 19[illegible] में [illegible] के लिए पुरस्कृत
आवासीय पता	कीर्ति कला केन्द्र
	565/115, पूरन नगर, आलमबाग, लखनऊ उ0 प्र0
विशेष	सौम्या जी रूप-सौन्दर्य-सम्वेदना की कवयित्री हैं। संगीत एवं चित्रकला में इनकी बड़ी अभिरुचि है। आकाशवाणी मथुरा से इनकी कविताओं का प्रसारण समय-समय पर होता रहता है।

कठिन है शब्दों में कहना

जहाँ पर मीत हैं अपने, वहीं संसार है अपना
उन्हें पाकर लगा हमको, हुआ साकार है सपना

वहीं छोटा सा घर जैसे, हो महलो का शहर जैसे
यहीं हैं धूप के गायन, यहीं हँसती है ज्योत्स्ना

जलधि के रत्न से बादल, पवन के रूप मे पाटल
तटों की गोद मे माँसल, साँवरी नदी निर्वसना

तितलियाँ, पुष्प, पंखुड़ियाँ, चहकती रँगभरी चिड़ियाँ
बसन्ती सुख सने तन से, लहर के संग में बहना

यही उपलब्धि जीवन की, यही समृद्धि क्षण क्षण की
सुखद अनुभूतियाँ मन की, कठिन है शब्द में कहना

बहुत प्यासा पपीहा था, जलद आया मसीहा सा
घटाओ इसी आँगन मे, बरसते यों सदा रहना

प्रकृति के प्रिय उभारों को, नियति के चाँद तारों को
भरेंगे दृष्टि में यों ही, यही तो मन्त्र अब जपना

बर्फ मत सिहरना हम पर, अश्रु मत ठहरना पल भर
आँधियो मत डराना तुम, वेदनाओ नहीं तपना

लग रही सृष्टि बाहों में, मित्रता बसी चाहों मे
संग अपनत्व हैं सौम्या, बनी सौभाग्य सी घटना

हिन्दी गज़ल

राज्य राम का या रावण का, सीता को तो दुख पाना है
स्वर्ण-हिरन, इच्छा मरीचिका, भूमि गर्भ मे छिप जाना है

बनती आश्रम कन्या झूठी, माँग रहा पहचान अँगूठी
जो समाज से भय खा जाये, उसने कब प्रिय पहचाना है

शाप मुक्त हो गयी अहिल्या, पर गौतम युग पीछे छूटा
अब संदर्भ खोजना मुश्किल, हर परिचय ही अनजाना है

अग्नि परीक्षा भी न मानी, नारी की बस यही कहानी
पुरुषो की शासित दुनिया ने, नारी को अबला माना है

विरहिन तपसिन बनी उर्मिला, यौवन बिछुड़न भरा सिलसिला
त्याग कही अंकित न होते, चुप-चुप आँसू बह जाना है

मथुरा से फिर गये द्वारिका, और दूर हो गई राधिका,
विरह गीत गा रही बाँसुरी, गोकुल कब लौटे कान्हा है

वस्तु समझ कर बाँटी जाती, दाँव जुए का बनी द्रौपदी
चीर हरण के अपमानो से, नित कब तक लाज बचाना है

साधु बने बुद्ध बन लौटे, देख रही हतप्रभ यशोधरा
बना प्रेम विरक्ति पथ राही, अब सपनों को पथराना है

वह पाषाण हृदय निष्ठुर चुप, मान लिया जिसको अपना सब
मीरा, हरि की बनी दीवानी, उसको पत्थर पिघलाना है

पीछे मुड़ती उम्र न "सौम्या", सुधियाँ बस पीछा करती हैं
परछाईं भी बने अपरिचित यही नियति का अफ़साना है।।

कवि परिचय

नाम : डॉ. महेश 'दिवाकर'

जन्म-तिथि : [illegible] जनवरी, [illegible]

जन्म स्थान : ग्राम [illegible] सादी, दिल्ली रोड, पो. पकवाड़ा, जिला मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी व अंग्रेजी), पी-एच. डी., डी. लिट. (हिन्दी)

कार्य क्षेत्र : अध्यक्ष, रीडर एवं शोध निर्देशक हिंदी विभाग, जी. एस. एच. (पी. जी.) कॉलेज, चांदपुर (बिजनौर) उत्तर प्रदेश

लेखन विधाएँ : कविता, मुक्तक, गीत, दोहा, कहानी, निबन्ध, शोध, समीक्षा, साक्षात्कार, सम्पादन, पत्रकारिता, अनुवाद आदि।

सह अध्यक्ष : [illegible] अखिल भारतीय साहित्य कला मंच

सम्पादक : 'आकुल', हिन्दी साहित्य पत्रिका, दिल्ली, 'भाववीथिका', हिन्दी, द्वैमासिक पत्रिका, चांदपुर (बिजनौर)

प्रकाशित कृतियाँ : 1. मौलिक कृतियाँ एक दर्जन से अधिक

2. सम्पादित कृतियाँ दो दर्जन से अधिक

सम्मान/पुरस्कार : देश विदेश की हिन्दी सेवी अनेकानेक संस्थाओ द्वारा विभिन्न अलंकरणों/उपाधियों से सम्मानित।

सम्पर्क : [illegible]-57, [illegible], मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : [illegible] 2415[illegible]

कविता

ऊँचे सिंहासन पर बैठे, देख रहे बर्बादी।
बिगड़ गये हालात देश के, यह कैसी आजादी।।
कहाँ शान्ति है? कहाँ प्रेम है? संसद के गलियारों में?
अजब तरह की आग लगा दी, इन नाजी हत्यारों ने।।1।।
'धाँय-धाँय' है देश जल रहा, मौन समर्थन होता है।
केवल कुर्सी रहे सलामत, सब कुछ अर्पण होता है।।
दिल्ली समझौता कर लेती, देश-द्रोही गद्दारों से।
सीमा पर यौवन लुट जाता, दुश्मन के हथियारों से।।2।।
कब तक छाती छलनी होगी? बोलो! कब तक वीर मरे?
तुम अन्धे-गूंगे-बहरे हो! निशि-दिन कितने वीर मरे।।
कल तक तो सब ठीक-ठाक था, हाय! आज क्या हुआ चमन को?
जाने कैसी हवा चल गयी? अथवा नजर लगी गुलशन को।।3।।
यह कैसा मृत्यु का तांडव? बिना शिव के यह खेल हो रहा।
पाप-पुण्य में भेद रहा क्या? सारा जीवन मैला हो रहा।।
कौन जानता था कि हमको, घर में मुँह की खानी होगी।
आजादी की इतनी भारी, कीमत हमें चुकानी होगी।।4।।
पता नहीं था फूल, शूल में कब परिवर्तन हो जायेंगे?
बनकर साँप-भेड़िए-चीते, खुद गुलशन को खा जायेंगे।।
निज सन्तानो की करतूते, देख-देख माँ रुदन करेगी।
हाय! अभागी के सम्मुख ही, ममता अपना सदन तजेगी।।5।।
बहुत हो चुका अब यह नाटक, बंद करो हे मतवालों।
देश-धर्म औ' आजादी की, राजनीति करने वालो।।
अब न जनता मौन सहेगी, पल-पल अत्याचारों को।
छोड़ो! शासन, मारो! वरना देश-द्रोही मक्कारों को।।6।।

श्री गंगा-महिमा

बैठे तेरे तीर पर, बजें मंजीरा-ढोल।
मन मे दस्तक दे रहे, माता! मधुमय ढ़ोल।।

हे माँ! मन की जानती, तू बेटे की बात।
कब से लगी मुराद है, पूरी कर दे मात।।

आये तेरे द्वार पर, लेने को आशीष।
माँ! करुणा का हाथ तुम, रखो हमारे-शीष।।

तू जाने, मैं जानता, प्रकट न होता लक्ष्य।
माँ! सबको देती रही, होकर सदा अलक्ष्य।।

कल-कल, छल-छल बह रहा, माता! तेरा नीर।
हा! कलियुग की वासना, जकड़े हुये शरीर।।

घंटी के स्वर बज रहे, पहुँच गयी फरियाद।
तेरी लहरें कह रहीं, होगी फलित मुराद।।

टूट गया विश्वास तो, जुड़े न फिर विश्वास।
पलभर मे पैदा करे, माँ! तू ही मधुमास।।

गंगा के तट बैठकर, देख रहे जलधार।
करती चन्दा की किरन, लहरो से मनुहार।।

कल-कल, छल-दल बह रहा, गंगा! तेरा नीर।
युगों-युगों से हर रही, तू धरती की पीर।।

कवि-परिचय

नाम	हरेन्द्र देवा
जन्म-तिथि	24-08-1952
जन्म-स्थान	मजूर गढ़ी, अलीगढ़
शिक्षा	एम. ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र) बी. एड., गोल्ड मैडलिस्ट
सम्प्रति	क्षेत्रीय लेखा कार्यालय (सेना) आगरा में अनुभाग :
सम्पर्क सूत्र	39, ऋषिपुरम, सिकन्दरा बोदला मार्ग सुरेन्द्र सिने दूरभाष : 2157504
विशेष	देवा जी सुललित गीतकार हैं। एक ओर देवा जी की रच प्रगतिवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं, तो दूसरी गीतों का भी इन्होंने प्रणयन किया है। आकाशवाणी से समय-समय पर इनकी कविताओं का प्रसारण इनकी अधिकांश कविताओं में व्यक्तिगत पीड़ा स अभिव्यक्त हुई है। कवि-सम्मेलनों में समय-समय जाते हैं। अलीगढ़ जनपद में जन्मे इस कवि से हिन्दी आशाएँ हैं।

ये नयन

एक निष्ठुर से क्या जुड़ गये ये नयन।
रैन-दिन अब उनींदे रहे ये नयन।।

तेरे नयनो ने क्या मौन पाती लिखी,
मुझको दुनियाँ निराली सी लगने लगी।
मन ये छूने लगा चाँद-तारे-गगन,
एक वंशी की धुन मन मे बजने लगी।

ऐसा क्या हो गया खुद से बेखुद हुआ,
हर शहर-गाँव ढूंढे तुझे ये नयन।।

मुझको कोई गली अब न लागे भली,
अब से तेरे शहर की गली देख ली।
भीड़ में भी अकेला लगे गाँव ये,
जब से तेरे अधर की कली देख ली।

मैं चलूँ जो कहाँ मेरी मंजिल है तू,
ढूंढते ढूंढते थक गये ये नयन।।

ये बियावान जंगल हुई जिन्दगी,
कैसे कदमों में तेरे करूँ बन्दगी।
है तपन ही तपन है अगन ही अगन,
अब तो आँसू ही आँसू हुई जिन्दगी।।

तेरी मूरत मे सूरत ये क्या देख ली,
मुस्कुराना भी भूले मेरे ये नयन।।

एक उम्मीद में उम्र कटती रही,
रोशनी की किरन एक दिन आयेगी।
फिर उठेगी महक इस लुटे बाग मे,
ये हृदय की तपन एक दिन जायेगी।

अब बहुत हो चुका प्राण दीपक जला,
डूबने अब लगे हैं मेरे ये नयन।।

सतरंगी दोहे

अर्थ व्यवस्था रो रही, कैसे-कैसे ढोंग।
गिरवीं गैया खेत सब, गिरवीं झुमकी लौंग।।

शिक्षा-दीक्षा व्यर्थ सब, बने कुटिल संयोग।
आबोदाना ढूंढते, लिये कटोरा लोग।।

बेबस जनता ने चुने, भांति-भांति के नाग।
दंशित संसद डालती, नीले-पीले झाग।।

पैंठ लगाई वक्त ने, रचे अजूबे योग।
टके सेर में बिक रहे, बुद्धि विशारद लोग।।

मुल्क अटारी पर चढ़ा, धन्धा छूये हाथ।
"बुधिया" भूखी मर रही, "होरी" हुआ अनाथ।।

सब राजा बेढंग हुये, फैला अति विक्षोभ।
पगडंडी से राजपथ, जाग उठा विद्रोह।।

फगुनाई ऐसी चली, टूटन लागी देह।
दिल दर्पण टुकड़े हुआ, नैनन बरसत मेह।।

देवरिया अंगना खड़ा, भाभी मले गुलाल।
रस भींगी प्रेयसि खड़ी, मनुआ करे मलाल।।

राधा हर गोरी लगे, श्याम लगे हर बाँक।
दिव्य लगे हर पांखुरी, मुस्काती हर आँख।।

फागुन छुप-छुप बाँचता, प्रेम-विरह के छन्द।
घूंघट पट खुल-खुल पड़ें, उठे केसरी गंध।।

आँख लड़ा कर दे गया, सुधियों की सौगात।
लगे अंधेरी रैन में, मधुर चाँदनी रात।।

दृष्टि मिले जब दृष्टि से, उपजे, नूतन दृष्टि।
ऊँचे-नीचे पग पड़े, मीठी लागे सृष्टि।।

कवि-परिचय

नाम — सालेश्वर 'मधुकर'

जन्म-तिथि — 1-07-1955

जन्म-स्थान — ग्राम- नगला अरौंनी

जिला- फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा — एम. ए. (हिन्दी साहित्य)

पिता — स्व. श्री थान राम

प्रकाशित काव्य-कृतियाँ — (1) अन्तरावलोकन

(2) उतर मोह के नभ से आओ

विशेष — 'मधुकर' जी एक सम्वेदनशील कवि हैं। आकाशवाणी के दिल्ली केन द्वारा आयोजित मासिक कवि-गोष्ठियों मे हिस्सेदारी। दिल्ली महानग में होने वाले कवि-सम्मेलनों में इनकी निरन्तर हिस्सेदारी। फिरोजाबा जिले में जन्मे इस कवि से हिन्दी-जगत आशान्वित है।

गीत

जब तक साथ चले जीवन में लगता था पथ महका-महका
आया मोड़ बिछड़ गए तुम पर भटक रहा मैं बहका-बहका

ख्वाहिश का नन्हा-सा पौधा हुआ अंकुरित मन के भीतर
एक-एक कर लगी चटकने कली-कल्पना तन के भीतर
आंखों में मधुमास मिलन का सजने लगा प्रेम-उत्सव बन
जागी एक अजीब भावना मदमाते यौवन के भीतर,
कांपे होठ अचानक मेरे छाया मौसम दग्ध विरह का,
आया मोड़ बिछड़ गए तुम पर भटक रहा मैं बहका-बहका।

कैसे पहुँच गए प्रिय बोलो अफवाहों के बाजारों में,
घिरे हुए दिन-रात आपसी सन्देहों की तलवारों में,
राजनीति के गलियारों में चर्चाओं के लगे पोस्टर,
तस्वीरें छप रहीं तुम्हारी सारे दैनिक अखबारों में,
सुनकर चिंगारी-सी फूटी बदन हो गया दहका-दहका,
आया मोड़ बिछड़ गए तुम पर भटक रहा मैं बहका-बहका।

जैसे भी हो मोह-नगर की चकाचौंध तजकर आ जाओ,
ओढ सादगी की चूनर को फिर से मन्द-मन्द मुस्काओ,
बहुत हो चुका पछतावे की तोष नदी में बहते-बहते,
देख चुनौती के दर्पण को बार-बार यों मत शर्माओ,
तरस रहा स्वागत करने को घर का आंगन लहका-लहका,
आया मोड़ बिछड़ गए तुम पर भटक रहा मैं बहका-बहका।

गीत

अंधकार जब तक दुनिया में फैला है भाई,
तब तक मैं भी दिशा-दिशा में दीप जलाऊँगा,
एक अभियान चलाऊँगा,

पहला अंधकार कट्टरता जिसे धर्म करता पोषित है,
सहज रूप मानवता का इस तरह बहुत होता शोषित है,
पाकर शरण धर्म की ये तो,
दिन दूना बढ़ता आता है,
जब तक हिंसा की चपेट में जकड़ी है ये दुनिया सारी,
तब तक मैं भी एक रहो का पाठ पढ़ाऊँगा,
एक अभियान चलाऊँगा ....

दूजा अंधकार गोदी में भेदभाग के खेल रहा है,
जाति-प्रथा के परिणामों को अब तक भारत झेल रहा है,
कोयल घायल पायल टूटी माँथे की बिंदिया भी छूटी,
पूछ रही है मैना दीदी भरी जवानी किस ने लूटी,
जब तक जुल्मों की बाँहों में सोई है ये दुनिया सारी,
तब तक मैं भी आग प्यार का बिगुल बजाऊँगा,
एक अभियान चलाऊँगा ... ..

तीजा अंधकार बतलाऊँ जुड़ा हुआ आतंकवाद से,
अर्थनीति से राजनीति तक घिरा हुआ पूरे विवाद से,
जब तक दोहरी नैतिकता में उलझी है ये दुनिया सारी,
तब तक मैं भी जीवन-मूल्यों को महकाऊँगा,
एक अभियान चलाऊँगा.......

चौथी अंधकार आपस में अविश्वास का बना हुआ है,
इसीलिए तो फूट डालने वालाहम पर तना हुआ है,
उन्नति का प्रकाश घर-घर में जब तक कदम नहीं रखेगा,
तब तक मेरा प्रण दीवाली नहीं मनाऊँगा,
आरती नहीं सजाऊँगा,
एक अभियान चलाऊँगा......



कवयित्री-परिचय

नाम	**श्रीमती रमा सिंह**
जन्म-तिथि	30-09-1965
जन्म-स्थान	ग्राम-घोडाही
	पोस्ट-भर्नपोय
	जनपद-बहराइच (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा	बी० ए०
सम्पर्क सूत्र	10/178 इन्द्रा नगर, लखनऊ
	दूरभाष : पी /पी 2450282
पिता	स्व० गजराज सिंह
विशेष	श्रीमती रमा सिंह की अधिकांश कवितायें भक्ति परक हैं। इसके अतिरि इन्होंने बाल-कवितायें भी लिखी हैं। कई संस्थाओं की पदाधिकारि सदस्या भी हैं। जीवन-पथ के कंटकों की चुभन इन्होंने यथासंभव अ चारों ओर के वातावरण में व्याकुलता से पाई है जो कि अन्तर के कवि सहज ही काव्य रूप में प्रस्फुटित हुई जान पड़ती है।

कृपा की याचना

गुरुदेव तुम्हारे चरणो में, मैं अर्जी लेकर आई हूँ,
दर्शन दें रहना हरदम यह अर्जी मे लिख लाई हूँ।

हो कष्ट भले तुमको गुरुवर, पर अर्जी मेरी पढ़ लेना,
अनुकम्पा कर स्वीकार सभी, अर्जी की शर्तें कर लेना।
बस यही विनय है छोटी सी, यह अर्जी में लिख लाई हूँ,
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, मैं अर्जी लेकर आई हूँ।

आशीष और वरदान संग तुम ज्ञान हमें देते रहना,
दिन-दिन हो दूना भक्ति-भाव निज कृपा-दान देते रहना।
मैं भक्ति, शक्ति, श्रद्धा, पूजा, भण्डार मांगने आयी हूँ,
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, मैं अर्जी लेकर आई हूँ।

तुम वन्दनीय हो सदा सभी वन्दना तुम्हारी किया करें,
कर नमन आपको प्रथम, शुरू अपनी दिन चर्या किया करें।
बस यही भावना भरी रहे, यह विनती करने आयी हूँ,
गुरुदेव तुम्हारे चरणों मे, मैं अर्जी लेकर आई हूँ।

तुमसे ईश्वर का ज्ञान मिला, वह ज्ञान हमे देते रहना,
तुम विधा बल के सागर हो, मुझको सन्मति देते रहना।
बस यही आज अपनी अनुनय, तुमसे मनवाने आई हूँ,
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, मैं अर्जी लेकर आई हूँ।

मन-मन्दिर की मूरत

प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मूरति बन दर्शन देना,

संगी साथी रिश्ते नाते, सबने किया किनारा है,
सुख भी अपना, दुख भी अपना पग-पग वारा न्यारा है।
पीड़ा मे परिवार घिरा है नाथ सुरक्षा कर देना,
प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मूरति बन दर्शन देना।

अर्न्तमन की सुप्त व्यथा ये, बोलो किसको दिखलाऊँ,
तेरे ही आगे मैं स्वामी जी भर कर रोऊँ गाऊँ।
घात और प्रतिघात सहे, आघात और फिर मत देना,
प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मूरति बन दर्शन देना।

तनिक सहारा भी दोगे यदि, दीखेगा जीवन प्यारा,
उसी सहारे की नौका से, होगी पार कठिन धारा।
दया-दृष्टि दिखलाते रहना, कृपा दृष्टि के कण कर देना,
प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मूरति बन दर्शन देना।

प्रभु तुम मेरे हो या सबके हो, इसकी खुशी अपार मुझे,
तुम सबकी रक्षा करते हो, नहीं भेट स्वीकार तुझे।
अन्धकार की घिरे न बदली और दुःख अब मत देना,
प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मूरति बन दर्शन देना।

प्रभु न आशा कभी तोड़ना, रिश्तों ने सब कुछ छीना,
टूट गई यदि आशा मेरी, मुश्किल में होगा जीना।
कोटि-कोटि वन्दना लो मेरी, जीवन की नौका खेना,
प्रभु तुम मेरे मन-मन्दिर की मरति बन दर्शन देना।

कवि-परिचय

नाम	डॉ. सैय्यद मकबूल अली
जन्म-तिथि	1 04 1956
शिक्षा	बी. ए., एम. एस., एम. डी., एल. एल. बी.
पिता	सैय्यद मकसूद अली
सम्पर्क सूत्र	[illegible] मुहल्ला/[illegible] गढ़ा जबलपुर (मध्य प्रदेश)
	दूरभाष 2422786
सम्मान	सन् 1978 में इन्टरनेशनल क्लब द्वारा राष्ट्रीय एकता हेतु पुरस्कृत, 1980 में गढ़ा [illegible] द्वारा सम्मानित। मध्य प्रदेश आंचलिक साहित्यकार परिषद द्वारा आयोजित प्रान्तीय महासम्मेलन (23 मई, 1993) मातनपुर मेलगांव जिला जबलपुर में नागरिक अभिनन्दन, मध्य प्रदेश साहित्यकार मंच द्वारा 1996 में प. कुंजी लाल दुबे श्रेष्ठ सेवा सम्मान, गणेशोत्सव समिति गढ़ा बाजार द्वारा 1996 में कौमी एकता सम्मान, मध्य प्रदेश लेखक संघ बैतूल द्वारा काव्य रत्न सम्मान, युवा भारती मंच द्वारा अकबर इलाहाबादी सम्मान।
विशेष	डॉ. सैय्यद मकबूल अली, जनपद-जबलपुर के मशहूर शायर हैं। कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों में समय-समय पर आमंत्रित किये जाते हैं। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाओं का प्रकाशन सन् 1970 से हो रहा है।

गज़ल

इख़्लाक़ो मुहब्बत को जगाना है दोस्तो।
पैगाम ये जहाँ को सुनाना है दोस्तो।।

हिन्दू हो मुसलमान हो, सिक्ख हो या ईसाई।
ऐसा ही एक पाठ पढ़ाना है दोस्तो।।

अपने वतन में आते हैं नफ़रत के ज़लज़ले।
हँसते हुए इनको भी निभाना है दोस्तो।।

हर तरह के वतन में जो बिखरे पड़े हैं फूल।
उन सबका एक घर भी बनाना है दोस्तो।।

छाई हुई है हर तरफ नफ़रत और जहालत।
लोगों के जेहन से ये मिटाना है दोस्तो।।

"मकबूल" तो चला है सुकूँ की तलाश में।
हर कौम को गले से लगाना है दोस्तो।।

ग़ज़ल

ज़िन्दगी में दर्द को बेसाख़्ता आने तो दे।
बिजलियां चिन्गारियाँ बेदारियाँ पाने तो दे।।

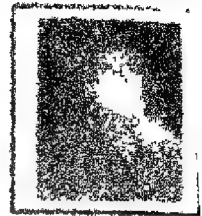
आँख का रूप और सबप हैं उफ़क की सुरखियाँ।
अपने चेहरे पर मोहब्बत के निशां आने तो दे।।

जिस्म को दीदार पलकी है मगर मेरे खुदा।
तुम मुझे मायूसियों का ये मकाँ ढाने तो दे।।

मेरे लब पे तेरी चाहत पे तिरे रूखसार पे।
जो ग़ज़ल हो आये महफ़िल में जरा गाने तो दे।।

मेरी ग़ज़लों में रहो या मेरी आवाज़ों में तुम।
पहले दुनियां में मुझे "मकबूल" हो जाने तो दे।।

कवि-परिचय



नाम	गिरजा शंकर लाल/ शंकर "सरल"
जन्म-तिथि	15-06-1956
जन्म-स्थान	गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
पिता	श्री श्याम लाल
शिक्षा	एम. एस. सी. (गणित)
स्थायी पता	द्वारा श्याम लाल, दाऊदपुर गोरखपुर
	दूरभाष - 227300
स्थानीय पता	सहायक लेखाधिकारी, तृतीय/61 गंगा विहार कालोनी, इलाहाबाद
विशेष	सामाजिक परिवेश के यथार्थ व विडम्बनाएं प्रायः मन को मथती रहती हैं। ऐसे में भावुक व संवेदनशील मन अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए शब्दों के समुद्र से शब्दों का चयन करने में सफल हो ही जाता है।

ये कैसा है विकास

पचास वर्षों बाद का
ये कैसा है विकास
लाखो-करोड़ों को तन ढकने को
नहीं उपलब्ध है जरूरी लिबास
उनके लिए छतों की मानिंद है
खुला-खुला विस्तृत आकाश
कितनों के लिए अंतहीन बनी
रोजगार की तलाश
ठोकरे खाते-खाते कितने हो जाते
तथाकथित जीवन से हताश
अक्सर करना पड़ जाता
बहुतेरों को है उपवास
असंख्य अभी भी जी रहे हैं
बन कर ताकतवरों के दास
खटते-खटते हो जाता है
उनमे रूग्णता का वास
बहुधा दवा अभाव के कारण
उखड़ जाया करती है सांस
पत्नी-बच्चों के जीवन से
मिट जाती है बची खुची उजास
दबे-कुचलों को गम में डुबो कर
गीत संगीत कैसे है आता रास
संवेदना शून्य बन आज का मानव
ईश्वरांश होकर क्यो करवाता अपना उपहास

चाहत

घर घर मे
संयमी सदाचारी नंदन हो
भाई-बहन के बीच
प्रेम का अटूट बंधन हो
जीवन मे सत्य-सरलता
और सात्विकता का अवलंबन हो
अभिभूत प्रेम से मानवता जगे
न कहीं हिंसा हो, न क्रंदन हो
कार्य के प्रति समर्पण रहे
प्रयास इस दिशा में कभी मंद न हो
नियम-कानून का पालन हो
न कि इनका उल्लघन हो
जन-मानस की समस्याएं सुलझे
कुछ ऐसा ही प्रबंधन हो
अच्छे गुणों को करे आत्मसात भी
न कि केवल ईश वंदन हो
ऐसे जीवन आदर्श प्रस्तुत करें
कि सर्वत्र अभिनंदन हो
विश्व पटल पर इस देवभूमि का
सही मायनों में अंकन हो

कवि-परिचय

डॉ० सुनील कुमार अग्रवाल

6-07-1959

हल्द्वानी (नैनीताल)

श्री राम गोपाल अग्रवाल

एम. एस. सी.; पी. एच. डी. (जन्तु विज्ञान)

कविता, गीत, नवगीत, गजल, हाइकु, लघुकथा,
निबन्ध, लेख एवं संस्मरण

(1) 'अंकुर' कविता संग्रह (शिक्षा प्र0, आगरा)

(2) 'वृक्षमित्र' खण्ड काव्य (रूचिका-कृति प्र0, कलकत्ता)

"नई शती के नाम", "प्रत्यञ्चा", "हाइकु-1999", "हिन्दी गजल पच
"कवितायन", "हे मातृ भूमि भारत", "शब्द संगम", "कलम
जिंदा है" सहित लगभग दो दर्जन संकलनों में। देश भर की पत्रि
में निरन्तर प्रकाशित।

(1) अखिल भारतीय साहित्य कला मंच द्वारा "साहित्य श्री स

(2) अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति प्रबोधक महासघ द्वारा "राष्ट्रीय हिन्द
समस्त्राब्दि सम्मान"

(3) भावार्पण द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान

(4) अग्र-समाज पश्चिमी उत्तर प्रदेश शाखा द्वारा 'साहित्य सेवा स

(5) 9वें अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन गाजियाबाद द्वारा 'काव्य श्री'

(6) आचार्य श्री चन्द कविता महाविद्यालय एवं शोध संस्थान है
द्वारा 'राष्ट्र सचेतक' सम्मानोपाधि, आदि।

आकाशवाणी रामपुर द्वारा

(1) "संकेत" वैचारिक मंच

(2) गंगा-जमनी साहित्य मंच चंदौसी

एस0 एम0 पी0 जी0 कॉलेज चदौसी के जन्तु विज्ञान विभाग मे

स्वप्निल सदन, रानी बाग, सुभाष रोड, चंदौसी, मुरादाबाद (उत्तर

दूरभाष : 202412

अनुत्तरित प्रश्न

देखते सब लोग, तरु-तन
और फल, पुष्प, पत्र।
जड़ की गुमनामियों को, देखता है कौन?

भवन और अट्टालिकाएं
दीखतीं चहुंओर सबको।
आधारशिला, देखता है कौन?

नर्तन, मुस्कराते अधरों का
देखते सब लोग।
पर अन्तस पीड़ा को, देखता है कौन?

दीप से प्रकाश किरण
हो रही है परावर्तित।
दीप की बाती झुलसती, देखता है कौन?

झिलमिलाते, मुस्कराते
मोतियों को देखते सब।
गर्भ मे, सीपी की पीड़ा, देखता है कौन?

प्रपात निर्झर, नीर निर्मल
प्रतिध्वनित होता है, कल-कल।
पाषाण का छिद्रित हुआ तन, देखता है कौन?

संसृति संवेदन

दीपक! नीरव जलना
जग आलोकित करना
अनुकम्पित हो
बुझने का संकेत न देना।

जल अविरल बहना
सदा सुदीर्घ रहना
गर्तों में गिर
जड़ता का संदेश न देना।

पुष्पो! नित नित खिलना
सुरभित शोभा देना
कर्कशता को सहना, किन्तु
म्लान न रहना।

विहग! उड्डयन उत् रहना
परिक्लांत होकर
पिंजर में
बंदित न रहना।

भू के तुम हिमशिखर उत्तस
करो तुम नभ स्पर्श
निर्मल नीर सरित को देना
उत्तंक, उज्ज्वलित रहना।

वृक्ष! तुम रहना हरित
तन हो कितना क्षत-विक्षत
हर आघात तुम सहना
कलित-फलित ही रहना।



कवि-परिचय

नाम	अशोक पटसारिया 'नादान'
जन्म-तिथि	1-01-1960
शिक्षा	एम0 ए0 भूगोल आनर्स
पिता	श्री कैलाश किशोर पटसारिया
सम्पर्क सूत्र	हस कुटी, रेन्ज मुहल्ला बड़ा मिंधौरा जनपद-टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)-472331 दूरभाष : (07681) 284722
सम्मान	(1) सरस्वती साहित्य सम्मान-सरस्वती साहि (2) कविवर मैथिली शरण गुप्त सम्मान-साहित्य मथुरा (3) साहित्य श्री सम्मान-अरविन्द प्रकाशन कै (4) काव्य-साधना पुरस्कार-महाराष्ट्र दलित साहि (5) पद्म श्री डा0 लक्ष्मी नारायण दुबे सम्मा पानीपत (6) सरस्वती प्रतिमा सम्मान-सरस्वती साहित्य (7) पृथ्वीपुत्र सम्मान-राजेशवरी प्रकाशन, पूना (8) साहित्य शिरोमणि सम्मान-सुरभि साहित्य खण्डवा (9) राष्ट्र सचेतक सम्मानोपाधि-आचार्य श्रीचंद एव शोध संस्थान हैदराबाद (आँध्र-प्रदेश)
विशेष	'नादान' जी हिन्दी के उदीयमान कवि हैं। इनकी अ के संघर्षपूर्ण जीवन की विसंगतियों को उकेरने का होती हैं। लघु-पत्र-पत्रिकाओं में इनकी कविताओ समय पर होता रहता है।

गीत : "कैसे आयेगी खुशहाली"

नहीं सहा जाता अब हमसे, बाग उजाडे उसका माली।
इसीलिये मजबूर हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।

अगणित रावण और दुशासन, चौराहों पर डेरा डाले।
बहिन और बेटी की अस्मत, का सौदा हो करने वाले।।
और पेट की आग, गरीबी, जिस्मों को खुद करे हवाले।
ऐसे विकट समय मे कैसे, मुस्काये अधरो की लाली।।
इसीलिये मजबूर हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।1।।

पूंजी पतियो, चोर माफियों, गुण्डो, के हो देश हवाले।
और देश के कर्णधार जब, करते हो नित नये घोटाले।।
गांधी के हत्यारे हो जब, शासन सत्ता करने वाले।
ऐसी विषम परिस्थितियों मे, कैसे आयेगी खुशहाली।।
इसीलिये मजबूर हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।2।।

नन्हें-नन्हें हाथ भोर से, कागज पन्नी चुनकर लाये।
सांझ सकारे झूठन पाकर, मुआ पेट की आग बुझाये।।
अधनंगे मानव के पुतले, फुटपाथों पर जब सो जाये।
बिना दवा दम तोड़े रामू, ठण्डी हाड़ कँपाने वाली।।
इसीलिये मजबूर हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।3।।

प्रतिभाओं के अरमानों को, कुचले खुद कानून हमारा।
आरक्षण और जाति पांति पर, चले देश मे उल्टी धारा।।
नौजवान घर-घर बैठे हों, बनी चाकरी एक सहारा।
तन-मन पर पैबंद लगे हों, कैसे आज मने दीवाली।।
इसीलिये मजबूर हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।4।।

भ्रष्टाचार पनपता है, मंहगाई सुरसा सा मुंह फाड़े।
ऊपर से नीचे तक रिश्वत, का फैशन जब आये आड़े।।
और वक्रता के ठेके हों, शिक्षाविद सब झण्डा गाडे।
सस्ता है इन्सान और, कुत्तों की होती है रखवाली।।
इसीलिये "नादान" हाथ ने, सही समय पर कलम उठा ली।।5।।

"आज से हिन्दुस्तान हमारा है"

आज देश के कर्णधार को, हिजड़ा ने ललकारा है।
भ्रष्ट शासको हटो आज से, हिन्दुस्तान हमारा है।।

पदलोलुपता और स्वार्थ मे, तुमने कुछ ना देखा।
सत्य अहिंसा न्याय प्रेम, को किया सदा अनदेखा।।
भ्रष्टाचारी रिश्वतखोरी, फैलाया तुमने आतंक।
भाई-भाई मे आरक्षण ने, आज खींच दी रेखा।।
इसीलिए ये एक तमाचा, गाल तुम्हारे मारा है।
भ्रष्ट शासकों हटो आज से, हिन्दुस्तान हमारा है।।1।।

रखा ताक पर राष्ट्रहितो को, और खजाना साफ किया।
उठा दिवारें धर्म जाति की कैसा, ये इन्साफ़ किया।।
वोट की खातिर मंदिर मस्जिद, का छेड़ा तुमने झंझट।
कई बार घुटने टेके, और गद्दारो को माफ किया।।
इसीलिए तुमको चेताने, पहला झटका मारा है।
भ्रष्ट्र शासकों हटो आज से, हिन्दुस्तान हमारा है।।2।।

पुरूषोचित पुरूषार्थ छोड़कर, जो भी तुमने काम किया।
घोटालो पर घोटालो 'नादान' , देश बदनाम किया।।
जनता की नजरो मे गिरकर, खो दी तुमने अपनी साख।
सोने की चिड़िया का भारत, उसका काम तमाम किया।।
लिए कटोरा भीख मांगते देखा तो, फटकारा है।
भ्रष्ट शासकों हटो आज से, हिन्दुस्तान हमारा है।।3।।

कवि-परिचय

नाम	डॉ० (श्रीमती) नीरज शर्मा
साहित्यिक नाम	डॉ० नीरज सुधांशु
जन्म-तिथि	17·07 1961
जन्म स्थान	लखनऊ
पिता	श्री भूपेन्द्रनाथ शर्मा
	(रिटा० एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर, ओ. एन. जी. सी.)
माता	श्रीमती शमिला शर्मा
	(रिटा० शिक्षिका)
पति	डॉ० सुधांशु शर्मा
शिक्षा	बी. ए. एम. एस. (गुजरात आयुर्वेद यूनिवर्सिटी)
	डी. ई. एम., पी. जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एण्ड मास कम्युनिकेशन
वर्तमान व्यवसाय	चिकित्सा (निजी)
लेखन विधाएँ	कविता, गीत, दोहे, ग़ज़ल, निबन्ध, व्यंग्य इत्यादि।
प्रकाशित कृतियाँ	विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे अनेक बार कविता, व्यंग्य, निबन्ध, लेख इत्यादि का प्रकाशन, सोन चिरिया, नई शती के नाम एव अन्य अनेक सकलनो में रचनाएँ प्रकाशित।
प्रसारण	आकाशवाणी नजीबाबाद से समय-समय पर वार्ताओं का प्रसारण।
सम्मान	अखिल भारतीय साहित्य कला मच, चाँदपुर द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान।
	जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा, 'रामवृक्ष बेनीपुरी जन्म शताब्दी' सम्मान।
सम्पर्क	विद्या नर्सिंग होम आर्य नगर, नई बस्ती, बिजनौर
	दूरभाष : 01342-262186

माँ

माँ कहते हैं किसे?
छोटे से तुच्छ बीज को
अपने रक्त से
सींचकर
एक जीव का रूप देने वाली
स्त्री!
अवश्य पहुँचाती होगी।
उस तक
नन्हे अनजान जीव की
हँसी-रूदन या फिर
चीत्कार।
हर क्रिया-कलाप को
महसूसती वह
करती है एक
नन्हें जीव का सृजन
जो जीता है उसी की तरह
उसका दिया जीवन।
फिर क्या हो गया उस माँ को?
क्या करवाते भ्रूण हत्या
उसे नहीं सुनाई देती
वह चीत्कार?
जो कहती अपनी माँ से
मुझे मत मार, मत मार, मत मार
मुझे मत मार!

विनती

धूप-चंदन पुष्प धरकर

थाल तुम सुन्दर सजा लो,

देवता का रूप हैं वे,

आरती उनकी उतारो।।

विरह कंटक से गलित हैं

पग न देना घाव कोई,

पंथ पर मेरे सजन के

फूल बरसाना बहारो।।

युगयुगो की तृषा मेरी

उनकी अब मिट जाएगी।

यही है करबद्ध विनती,

नेह बरसाना सितारो।

कल अचानक देख उनको,

भाव-सरिता बह चलेगी।

कह न पाएँगे बयन कुछ,

हाल कह देना निगाहों।

जन्म बीते तरसते यूँ,

अब मिलन की घड़ी आयी।

फिर न कोई छीन ले तुम,

शीघ्र ले चलना कहारो।

कवि-परिचय

नाम	विजय कुमार 'बालेन्दु'
जन्म तिथि	[illegible]
शिक्षा	[illegible]
जन्म स्थान	ग्राम-पूरे [illegible], पो० [illegible] जनपद [illegible] 230 [illegible]
पिता	स्व० बद्री प्रसाद [illegible]
प्रकाश्य कृतियाँ	नव सृजन (काव्य-संकलन)
वर्तमान पता	513/26, कृष्णा विहार, शेरवानी नगर, सुलेम सराय, इलाहाबाद
विशेष	श्री विजय कुमार 'बालेन्दु' हिन्दी के उदीयमान कवि और हिन्दी की सेवा के प्रति उत्साह रखने वाले व्यक्ति हैं। इनमें [illegible] क्षमता [illegible] [illegible] रहे हैं। [illegible] प्रतियोगिता में कई बार पुरस्कृत हो चुके हैं। काव्य के अतिरिक्त निबन्ध साहित्य में भी इनकी विशेष अभिरुचि है। प्रयागीय संस्था [illegible] द्वारा 'कवि श्री' उपाधि से सम्मानित भी हैं; इस रचनाकार की सृजन शक्ति के प्रति हिन्दी काव्य-जगत आशान्वित है।

कर्म और किस्मत

एक समय की आम बहस छिड़ गई कर्म और किस्मत मे,
मेरा हाथ सदा होना है. मानवता की उन्नति मे।
बोला कर्म, सुनो, ऐ किस्मत! मैं ही सबका कर्त्ता हूँ।
मानव सहित सभी जीवो की उदरपूर्ति मैं करता हूँ।
पाप-पुण्य मुझसे ही होते, मै ही सबका भर्ता हूँ।
सन्मार्ग दिखाकर मानवता का मैं ही तो उद्धर्ता हूँ।
सूरज की गरमी मुझसे है, चन्दा की शीतलता भी।
सागर की गहराई मुझसे, अम्बर की ऊँचाई भी।
उत्थान-पतन सब मानव का ऐ किस्मत! मैं ही करता हूँ।
उन्नति के उत्तुङ्ग शिखर पर मानव को मैं करता हूँ।
इसलिए श्रेष्ठ मैं तुमसे हूँ इस सृष्टि मे सुन ले ऐ किस्मत!
मान श्रेष्ठता तू मेरी सुन दासी मेरी ऐ किस्मत।''

किस्मत बोली, ''सुनो कर्म! इतराना अच्छी बात नहीं।
मुस्काना अच्छा है लेकिन, खिसियाना अच्छी बात नहीं।
माना कि कर्म ज़रूरी है, पर फल मिलना अनिवार्य नही।
यदि तू ही सब कुछ करता है और सबका तू उद्धर्ता है,
तो चींटी, अजगर जैसों का पेट कौन फिर भरता है?
अथक परिश्रम करने वाला भी क्यों असफल रहता है?
और अहर्निश सोने वाला भी क्यों मस्ती करता है?
राजमहल में जन्में शिशु का कर्म कौन सा होता है?
सड़क के किनारे जन्मे शिशु का कर्म कौन सा होता है?
जीवों को सुख-दुख देती हूँ, तुम उनके साथ रहो न रहो।
हानि-लाभ भी मुझसे है, तुम साथ किसी के रहो न रहो।
कर्म के साधन मैं ही देती, कर्म में बाधक मैं ही बनती।
मैं ही तेरे सब फल देती, तेरा वाहक मैं ही बनती।
सुनकर विवाद उन दोनो का, कर्त्ता बोला उन दोनों का।
''आपस में क्यों लड़ते हो तुम? अस्तित्व एक से दोनो का।
किस्मत ही कर्म कराती है, यह अटल सत्य है जीवन का।
पर छोड़ कर्म किस्मत पर रोना, लक्ष्य नहीं है जीवन का।।''

जीवन सतत् संघर्ष है

जीवन सतत् संघर्ष है, संघर्ष हम करते रहे
विश्वास का सम्बल बनाकर, हम सदा बढ़ते रहे।
संघर्ष लेता है परीक्षा व्यक्ति के पुरुषार्थ की
भावना कितनी है उसमें त्याग व परमार्थ की
संघर्ष से भयभीत ना हो, कर्म हम करते रहें।। 1 ।।

विश्व को आलोक देता सूर्य अपनी रश्मियों से
ग्रहण उसको भी छिपाता चन्द्र की परछाइयों से
सूर्य की यह सीख प्रियवर! यत्न हम करते रहें।। 2 ।।

चन्द्रमा की शीत किरणों से हमें ठंडक मिले
पर उसे भी तो ग्रहण की यातना निर्दयी मिले
यातनाओं से निकलकर लक्ष्य हम पाते रहें।। 3 ।।

बीज से अंकुर निकलता मृत्तिका का भार सहकर
नीर बनता सदा मोती सीपियों में बन्द रहकर
इसलिए ओ मीत! अनुदिन कष्ट हम सहते रहे।। 4 ।।

अग्नि में तपकर निखरता है यथा कंचन सदा
पिसकर शिला पर रंग लाती है यथा मेंहदी सदा
वैसे सदा संघर्ष से ही सिद्धि हम पाते रहें।। 5 ।।



कवयित्री-परिचय

श्रीमती शालिनी खान

3 जुलाई, 1984 ई0

एम0 ए0, (हिन्दी, दर्शनशास्त्र)

क्वार्टर नं0 106 टाईप-2

संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ

दूरभाष : 2668306

श्रीमती शालिनी खान रूप-सौन्दर्य-सम्वेदना की कवयित्री हैं। इन्होने अपना साहित्यिक जीवन काव्य-सृजन से आरम्भ किया है। शालिनी जी वैचारिक प्रतिद्वंदिता के चौराहे पर खड़ी होकर जब भी शब्दो की बौछार में भीगती हैं तो अपने निकट ही कविता का अहसास करती हैं। काव्य के अतिरिक्त कथा साहित्य में इनकी रुचि है। नाटक में भाग लेना और देश विदेश में भ्रमण करना इन्हें रुचिकर है। विश्व बन्धुत्व की भावना तथा देश प्रेम इनमें खूब है। भेद-भाव से दूर, समग्र मानव-जाति को एक पिता की सन्तान मानती हैं। लघु पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाओ का प्रकाशन होता रहता है। इनका स्वभाव अत्यन्त मृदुल है। हरदोई जनपद में जन्मी इस कवयित्री से हिन्दी काव्य-जगत को बड़ी आशाएँ हैं।

अहा! कैसी घड़ी आज ज़िन्दगी में आयी है

जब से दुलार-प्यार नैनों में तुम्हारे दिया
मेरे चित्त में भी एक [illegible] समायी है।
बनते-बिगड़ते मन में राग जो अनेकों छिड़
छन्दों की तो मनु मैंने शृंखला सजायी है।

मन है विहंग बना तैर रहा सूने में भी
डोले है सद्‌वास लिए कहीं क्या प्रवासी है?
नहीं रहता है यहाँ, आसपास भी तो कहाँ
दूर जाने वो निठुर किस देश का निवासी है?

तुमने निहोर किया, नैनों से विभोर किया
मुझे भी निहाल किया, यूँ प्रीत जो जतायी है।
सभी कुछ दिया फिर, एक पल में ही जीत लिया
हारने की स्वाद भी तो तुम्हीं ने चखायी है।

जब से छुआ है मुझे, हर श्वास [illegible] महक गयी।
मेरे देह तारों में तरंग [illegible] समायी है।
मैं तो हूँ अनजान नहीं, ज्ञान मुझे खुद का भी
जाने कैसे नज़रों से जाम यह पिलायी है।।

बनी पारिजात मैं तो, मन चंचल लहक रहा
अहा! कैसी घड़ी आज ज़िन्दगी में आयी है।

मेरी देह-वीणा भी विहाग बनने लगी

ऐसी छवि देखी मैंने प्रिय की लुभावनी
कि मुझे भी समय की सीमा 'लघु' लगने लगी।
आँखें मेरी बन्द हुईं, साँसें सद्गन्ध हुईं।
पीड़ा औ विपदायें सभी 'मधु' लगने लगी।। 1 ।।

चाँदनी की रश्मियाँ सुपीर सी उगा रही
मेरी लेखनी भी छन्द आज लिखने लगी।
कितने निबन्ध बने, बाकी फिर भी तो रहे
ऐसी व्यथा-कथा जिह्वा 'मौन' कहने लगी।। 2 ।।

प्रिय के प्रसंग के प्रसून हूँ लुटाती चली
लो, जहाँ-तहाँ, गली-गली गूँज उठने लगी।
हुए तार-तार झंकृत, राग-राग बज उठे।
मेरी देह-वीणा भी विहाग बनने लगी।। 3 ।।



कवि परिचय

नाम	अनिल शर्मा 'अनिल'
जन्मतिथि	1-5-1969
जन्मस्थान	धामपुर (उ० प्र०)
शिक्षा	एम० ए० (हिन्दी साहित्य), बी० टी० सी०, एल० एल० बी०, आयुर्वेद रत्न
कार्यक्षेत्र	बेसिक शिक्षा विभाग में अध्यापक
सम्पादित कृतियाँ	अनुभूतियाँ (काव्य संकलन), स्मारिका अविरल प सा० अविराम, युवा भारत और द० बिजनौर का सह
साहित्यिक संस्थाएँ	अध्यक्ष 'इन्द्रधनुष', सचिव अमर साहित्य मण्ड रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य स्मृति पुरस्कार समिति
काव्य संकलन (सहयोगी)	लगभग दो दर्जन काव्य संकलनों के सहयोगी एवं अभिनन्दन ग्रन्थों में सहयोग।
प्रकाश्य कृतियाँ	आ गया मौसम सुहाना (गीत संकलन) उधार की चमक (लघु कथा संकलन) प्रतिभा के आँसू (काव्य संकलन) धामपुर : अतीत के झरोखे से (ऐतिहासिक लेखमाला जिन्दगी गीत हो जायेगी (गजल संकलन)
सम्मान/उपाधि	लगभग एक दर्जन से अधिक विभिन्न साहित्यिक सम
सम्पर्क	अमर प्रिन्टिंग प्रेस, 82, गुजरातियान, धामपुर (बिज 2246761

आगे ही बढ़ते जाना

मातृभूमि की रक्षा के हित, सीमा पर डट जाना रे।
करना होगा बलिदान तुम्हें, आगे ही बढ़ते जाना रे।।

देश ही है तो मेला त्यौहार,
देश ही है हाट-बाजार।
देश ही है सुख का आधार,
देश ही है अपना संसार।।
इसको तुम सुखद बनाना रे।। करना होगा... ....।।

देश हमारा पूजा-अर्चन,
देश हमारा सन्ध्या वन्दन।
देश हमारा गायन-नर्तन,
देश हमारा सारा जीवन।।
यह जीवन तुम बचाना रे। करना होगा.............।।

मातृभूमि रक्षा के वादे,
दृढ़ संकल्पों वाले इरादे।
दुश्मन को धूल चटा दे,
इनका नामों-निशां मिटा दे।।
तुम दुश्मन को सबक सिखाना दे। करना होगा.. . .. .।।

फिर न कोई नजर उठाये,
फिर न कोई कदम बढ़ाये।
इनको ऐसा सबक सिखाये।
लाहौर में अपना ध्वज लहराये।।
ऐसा ही कर दिखलाना रे। करना होगा............ ..।।



जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

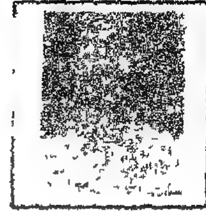
जन्म हुआ है जिस भूमि पर, भूमि वो स्वर्ग समान है।।
भारतवर्ष नाम उसी का, जग में अलग पहचान है।।
गंगा यमुना जैसी नदियां, इसी देश में रही बसी।
जननी जन्मभूमि श्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

राम-कृष्ण-गौतम-गाँधी, गुरुनानक-सूर-कबीरा से।
महापुरुष और भक्त हुए। तुलसी-रसखान और मीरा से।।
इनकी वाणी और गीतों मे देश, ईश की भक्ति बसी।
जननी..... ....।।

भगतसिंह, बिस्मिल, अशफाक, जैसे वीर शहीद हुए।
फांसी के फन्दे जिनको, दीवाली होली ईद हुए।।
भारत माँ की जय बोली, चढ़ गये वो फांसी हँसी-हँसी।
जननी........ ... .।।

मातृभूमि रक्षा के हित। सर्वस्व न्यौछावर हो जाये।
महाराणा जैसे डटे रहे। चाहे कोई विपदा आये।।
खुशहाल सुरक्षित विपदा देश रहे। तब ही मिलती सच्ची खुशी।
जननी...... .

कवि परिचय



नाम — डॉ0 बलराम गुप्त 'संकर्षण प्रजापति'

जन्मतिथि — 01-07-1971

पिता का नाम — श्री बाबू राम प्रजापति

शैक्षिक योग्यता — एम0 ए0 (हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र, हिन्दी अनुवाद), एम0 फिल0, पी0 एच0 डी0, पी0 जी0 डी0 शोध, डि0 यू0 ए0, तमिल प्रोफि0 तमिल डिप्लोमा, बी0 एड0, एल0 एल0 बी0।

सम्प्रति — हिन्दी प्राध्यापक

सिद्धार्थ किसान पी0 जी0 कालेज, बस्ती।

प्रकाशित कृति — 'चित्रलेखा और वरमान की प्रेयसी' एक तुलनात्मक अध्ययन'

सम्पादित कृति —
1. स्वाति (काव्य संग्रह)
2. संवाद (मासिक पत्रिका)
3. दूर्वादल (त्रैमासिक पत्रिका)

सहयोगी संकलनों में प्रकाशन त्रिवेणी काव्य सुधा, स्वाति, सोनचिरैया, नीलमणि, प्रत्यञ्चा, नयी शती के नाम, कविता बदलते सन्दर्भ, अपने-अपने सच।

पुरस्कार एवं सम्मान —
1. उ0 प्र0 संसदीय संस्थान सम्मान।
2. प्रताप नारायण मिश्र स्मृति सम्मान।
3. अखिल भारतीय त्रिवेणी साहित्य संस्थान सम्मान।
4. जनतारण सेवा संस्थान सम्मान।
5. राष्ट्र सचेतक सम्मान।

साहित्यिक संस्था — अध्यक्ष-'अखिल भारतीय त्रिवेणी साहित्यिक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्थान' लखनऊ

सम्पर्क सूत्र — संकर्षण प्रजापति

155/78, मौलवी गंज, महेश प्रसाद स्ट्रीट, लखनऊ-18

मासूम द्वन्द्व

कुछ मासूम दिखते हैं।
मायूस-मासूम से लगते हैं।

छरहरी गदराती
खड़ी मुस्कराती है।
क्यों ऐसा लगता मुझे
रह-रह चिढ़ाती है?

हर माथे पर सलवटे दिखते हैं।
मायूस-मासूम से लगते हैं।

भाव-भंगिमा में छिपे
अनवरत प्रश्न।
भूल चुके खिलाड़ी खेल
नहीं मानते कोई अश्न।

द्वन्द्व छिपाये दिखते हैं।
मायूस-मासूम से लगते हैं।

रक्त की लाली

आजादी की धूप में

रक्त की लाली।

श्वेत पत्थर चिकने

काले अक्षर चिपके,

ज्ञान पथ

बदले मापदण्ड

अज्ञान का प्रतीक,

प्रदर्शन ताप का जाल

हर दिशा जाली।

भ्रष्ट तन्त्र

अन्याय मन्त्र

काले इरादे

आश्वासन की छाया

काया और माया,

विषैली हर बाती हुई

जीवन की पाली।।

कवि परिचय

नाम	जयनारायण बैरागी "जय"
जन्म तिथि	[illegible]-1972
माता का नाम	श्रीमती विद्यावती बैरागी
पिता का नाम	स्व0 श्री सीताराम जी बैरागी
पत्नी का नाम	श्रीमती मनीषा बैरागी
शिक्षा	एम0 ए0 (हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र, एम0 …
सम्प्रति	शासकीय सेवा (शिक्षक)
लेखन विधा	गीत, ग़ज़ल, नई कविता, ऐतिहासिक अनुसंधान
प्रकाशित कृति	'पयस्विनी' काव्य संग्रह
अन्य प्रकाशन	समाचार पत्रों में ऐतिहासिक आलेख, आकाशवाणी …
सम्मान	1. "रामवृक्ष बेनीपुरी जन्म शताब्दी सम्मान … पानीपत)
	2. "काव्य विभूति" (अ0 भा0 साहित्य एवं कला …
	3. मैथिली शरण गुप्त सम्मान अ0 भा0 सा0 3 …
	4. राष्ट्र भाषा रत्न (कप्तान गंज कुशीनगर) …
पता	17, कालेज रोड, झाबुआ, म0 प्र0 फोन 07392 …

रक्त और अभिमन्यु

ठहर जाओ अभिमन्यु!
मत आना अभी!
यह नहीं समय
तुम्हारे महाभारत का!
तुम्हारे असीम शौर्य का!!
सोचो युवराज!
सभी कुछ तो बदल गया
वह इतिहास/भूगोल
धरती/अम्बर/वायु/जल
वह नैतिकता-तुम्हारे द्वापर की,
वे मानवीय मूल्य!
सभी कुछ तो बदल गया युवराज
क्यूँ चाहते हो फिर
बंधना
वर्तमान के इन
जहरीले नागपाशों मे?
छः द्वारों को बेध
हो गये अंकित तुम
वीरता के स्वर्ण पटल पर
नमन किया स्वयं काल ने जिसे,
क्यूं चाहते हो,
फिर भला वीरता का विखंडन?
वह भी इस पैशाचिक दौर मे?

सोचो सौभद्र!
एक ही व्यूह
भेदा ना गया तुमसे
फिर अब तो
कई कई व्यूह है,
सिर्फ एक ही व्यूह के भीतर
कैसे भेद पाओगे फिर
इन समस्त व्यूह रचनाओ को
एक ही साथ!!!

पहली बार तो
पहुंच गये थे तुम
सातवे द्वारा तक भी।
पर अब!
कोई जयद्रथ/अश्वत्थामा
कर्ण/दुर्योधन/द्रोण
पहुँचने न देगा तुम्हें,
दूसरे द्वार तक भी।
छली जाएगी
एक बार फिर निर्भीकता तुम्हारी!
घोपेगा कोई न कोई
दुर्योधन पुत्र पुनः
तुम्हारी पीठ में खजर
मिटाने तुम्हारा अस्तित्व?
बिखरेगा धरती पर
मूल्यवान रक्त तुम्हारा

हे वीर शिरोमणी
छोड़ दो हठ अपना
लौट जाओ अपने लोक

उसी वैभवशाली अतीत में
ताकि शौर्य तुम्हारा,
दूषित ना हो!
साक्षी है
हर क्षण गलती का
अभिमन्यु का प्रतिरूप दूसरा
उत्पन्न नही हुआ आज तक।
छोड़ दो चिन्ता इस युग की
नियति निष्ठुर नही नियामक है।
नियति यह
परिणत हुई थी महाभारत में
परिचालित रही थी जो
अब तक।
समझना
तुम्हारी चिर निद्रा का
यह कोई स्वप्न है.........
जिसकी परिणति शायद.........

अस्तित्व एक

सुनसान अन्धेरी रात में
मूर्ति सा बैठा मैं!
और तुम!
जैसे मुझ पर गिरता प्रकाश!
आलौकित करता जीवन पथ,
सहस्त्रों रश्मियों की आभा लिए!
सत्य यही है
किसी मुद्रा के दो पहलू सा,
तुम मुझसे ! मैं, तुमसे !!
पर जलती तो तुम हो ना
अहसास करवाती मुझे
मेरा अस्तित्व
अपनी परिधि में बाँधे
जब कभी बुझोगी तुम
और समा जाऊँगा पुनः
गहरी रात्रि....अन्तहीन.........!

कवि परिचय

नाम	ललित कुमार उपाध्याय
जन्मतिथि	29 अगस्त, 1976
पिता का नाम	श्री डी० एन० उपाध्याय
स्थायी पता	सैदपुर, वाराणसी
पत्र व्यवहार का पता	[illegible]-6/VI, सी० डी० ए० (पे०), इलाहाबाद
रुचियाँ	काव्य लेखन, क्रिकेट खेलना, रेखाचित्र बनाना, साहित्य अध्ययन आदि।
शैक्षणिक योग्यता	परास्नातक (गणित)
विशेष	श्री ललित कुमार उपाध्याय हिन्दी के उदीयमान कवि और हिन्दी की सेवा के प्रति उत्साह रखने वाले तरुण हैं। इनकी अधिकांश कविताएं यथार्थ पर आधृत तथा कल्पना की झूठी उड़ान से कोसों दूर हैं। इनकी भाषा सीधी सादी सरल और स्पष्ट है। अलंकारों के मोह में न पड़कर इन्होंने अपनी अनुभूति एवं विचारों को स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है।

मैंने पढ़ा है किताबों में.

सुना है कथा पुराणो में,
कभी वक्त था, जब मानव एक थे,
हर व्यक्ति, नारी-पुरुष नेक थे,

पर आज, इन्हे हो गया है क्या?
मानव प्रेम का भाव सो गया है क्या?

क्यूँ सुनाई देती है, हर तरफ गोलियो की बौछार,
तप रही समस्त मानव जाति, तप रहा ये ससार।

कितनी विकृत मानसिकता हो चुकी है मानव की,
ऐसी तो ना थी, पुराकाल मे कभी दानव की।

बात-बात पे चलती है गोलियाँ,
हर मोड़ पर लगती हैं, बोलियाँ,

फिर भी लोग चुप क्यो आज हैं?
दुनियावालो क्या यही सभ्य समाज है?

पाप करना आज मानव का आचार है
सदाचार का नाम नहीं हर ओर भ्रष्टाचार है।

भाई ही भाई का आज काटे गला,
कैसे होगा कहो इस जग का भला।

पर होगा कोई न कोई तो रास्ता;
आओ मिलकर खोजे तुम्हे खुदा का वास्ता।

हर साँस में उठे आज ये ही तरंग,
आओ मिलकर जगायें हर दिल मे प्रेम उमंग।

कुछ तो कर जाये जिससे महक उठे ये चमन,
नाज करे तुझपे तेरा अपना वतन।



सब कुछ तो है पर वही नहीं जिसकी मुझे तलाश है,

सब कुछ तो है पर वही नहीं जिसकी मुझे तलाश है,
आँखें थक चुकी हैं और दिल उदास है।
रुक रहा है धमनियों का स्पन्दन, गूँज रहा है करुण क्रन्दन
फिर भी हर दिल को जीने की आस है।।

सच आज क्यों झूठ का गुलाम है,
हर ओर भ्रष्टाचारियों का नाम है,
पी चुके हैं वे, शर्म, लाज और शान्ति
फिर उन्हें और किसकी प्यास है।।
क्या सुनेगा कोई मेरी कलम की व्यथाएं
क्यूं सच नहीं बनती वीरों की गाथाएं
किंवदन्तियाँ ही क्यों हैं, प्राचीन कथाएं
फिर भी मुझे एक युग पुरुष की तलाश है।।
रास्ते कठिन हैं, परन्तु विश्वास है कुछ करने का,
मंजिलें दूर हैं, फिर भी उत्साह है लम्बे डग भरने का
खत्म हो रही हैं,
सीने की धड़कन, पैरों की थिरकन
होठों की लाली, हाथों का कंपन,
फिर भी मैं पा ही जाऊँगा उसे-
जो रोक दे इस करुण क्रन्दन को,
जो जोश दे, धमनियों में स्पन्दन को,
जो चुनौती दे जीवन-मृत्यु के आलिंगन को।।



कवियित्री परिचय



नाम	**कु0 आरती सिंह**
शिक्षा	स्नातक
पिता	स्व0 रवीन्द्र प्रताप सिंह
सम्पर्क सूत्र	शिव सदन, 107, कैन्ट रोड, लखनऊ (उ0 प्र0)
	दूरभाष (0522) 2450282
विशेष	कु0 आरती सिंह उभरते नये रचनाकारों में से एक हैं। इन्होंने अपना साहित्यिक जीवन काव्य-सृजन से आरम्भ किया है। इनकी अधिकांश रचनाएं देश-भक्ति परक हैं। स्व0 शिव सिंह 'सरोज' के परिवार में जन्मी इस कवयित्री से हिन्दी काव्य जगत को बड़ी आशाएं हैं।

धरती माता

एक हमारी धरती माता
हम सारों को प्यारी है।
इसकी मिट्टी में सब जनमें
अलग 2 बस क्यारी है।

आपस में मिल जुल कर रहना,
इसकी महिमा न्यारी है।
रंग बिरंगे फूलों ने ही
हर बगिया संवारी है।

एक चांद है किन्तु चांदनी,
हम सबको नहलाती है।
एक गगन की छत के नीचे,
शीतल पवन झुलाती है।

एक हमारा सबका माली,
करता नित रखवारी है।
इसकी मिट्टी में सब जनमें,
अलग-अलग बस क्यारी है।

एक सूत्र में बंधना सीखें,
मिल-जुल सुख-दुख को बांटे,
गन्ध सुमन को गले लगाएं,
कलियाँ हो चाहे कांटे।

आने वाले स्वर्णिम कल की,
करनी अब तैयारी है,
इसकी मिट्टी में सब जनमें,
अलग-2 बस क्यारी है।





भारत तेरे रंग अनेक

उत्तर में है खड़ा हिमालय,
दक्षिण दिशि मे जल है।
हर भारतवासी का जीवन,
उज्जवल और सरल है।

भगतसिंह से वीर हुए हैं,
ऋषि दधीचि से दानी।
राम,कृष्ण भी यही हुए हैं,
वेद व्यास से ज्ञानी।

इसकी प्रकृति मनोरम मंजुल,
इसकी छटा निराली।
रंग-रंग के फूल खिले हैं,
बिखरी है हरियाली।

भाँति-2 के रहन-सहन हैं,
अलग-2 हैं भाषा।
मिल-जुल कर जीवन जीने की,
हैं सब की अभिलाषा।

हर भारतवासी को इसका,
मिलता नित सम्बल है,
उत्तर मे है खड़ा हिमालय,
दक्षिण दिशि में जल है।

कवि परिचय

नाम	गजाननराव वि. शेंडे 'निर्भय नागपुरी'
विधा	कविता
प्रकाशन	पत्र पत्रिकाओं व काव्य संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित।
सम्प्रति	राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ आशुलिपिक।
सम्पर्क	शीतलामाता चौक, जसवंत टॉकीज के पीछे, गुरुनानक पुर, नागपुर (महा.)-440017

भारत तेरे रंग अनेक

वीरों की संतान हैं हम, भय नहीं किसी का।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

जिस्म मे जोश, मन में होश।
मस्तिष्क है, आशुतोष।।

कांटों भरी निशाओं में, सोना नहीं है सीखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

डोल रहा है दिल-ए-दरिया।
शौहरत भरा है यह आशियाँ।।

तूफानों के दौर में, प्रखर हो गई दिपशिखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

सरफ़रोशी की तमन्ना दिल में है।
देखे! जोर कितना बाजुए कातिल मे है।।

हिन्दुस्तानी मर्दों ने रोना नहीं है सीखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

धड़क रही है आज़ादी दिल में।
ले रही है अंगड़ाए, अपने मन में।।

मत रो माँ! तेरे लालों ने लिया है [illegible] सीखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा

भिन्न भिन्न है भेष यहाँ।
भिन्न भिन्न परिवेश यहाँ।।

फिर भी, हम सब एक हैं, कितना प्यार अनोखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा

सुनी है वीर शिवा की कहानी।
मन मे है झाँसी वाली मर्दानी।।

ज्वालामुखी है पग पग में, यह किस्मत का लेखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।

"तुम मुझे खून दो, मैं दूँगा आज़ादी"।
अनदेखी कर दी हमने, हुई है बरबादी।।

उस सुभाष के आदेशो को किसने कब था रोका।
झुकना नही है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

बापूजी की पावन यादें भाव विभोर कर जाती है।
"चले जाव" कहते ही प्रखर उत्क्रान्ति आती है।।

भगतसिंह सा भारत माँ का एक शहीद अनोखा।
झुकना नही है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

वीरों की संतानों जागो, अब जागन की बेला।
नाम वीर का खुद रोशन है, वैसे व्यक्ति अकेला।।

व्यर्थ विवादोंमें न उलझो, "निर्भय" मन से देखा।
झुकना नहीं है सीखा हमने, झुकना नहीं है सीखा।।

अखिल भारतीय साहित्य-कला-मंच की प्रयागीय शाखा के पदाधिकारियों और कार्यकारिणी-सदस्यों की सूची

संरक्षक — डॉ० मोहन अवस्थी

अध्यक्ष — श्री परमात्मा स्वरूप भारती

उपाध्यक्ष — श्री प्रेमसागर बहल 'सागर होशियारपुरी'
श्री जटा शंकर "प्रियदर्शी"

सचिव — श्री विजय कुमार 'बालेन्दु'

साहित्य सचिव — श्री अनिल कुमार 'मयंक'

सांस्कृतिक सचिव — श्री राकेश कुमार यादव

कोषाध्यक्ष — श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह

प्रचार सचिव — श्री शिव कुमार शर्मा

!! कार्यकारिणी सदस्यगण !!

श्री लाल जी तिवारी — श्री गिरिजेश कुमार

श्री शिव नरेश शर्मा — श्री शशि भूषण पाण्डेय

श्री सन्तोष कुमार — श्री अरविन्द कुमार मालवीय

श्री रामजी मिश्र — श्री गोपाल कृष्ण शुक्ल

श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह — श्री अशोक कुमार चौबे

श्री बृजेश कुमार मिश्र — श्री नरेन्द्र प्रताप सिंह

श्री मुहम्मद आजम — श्री जवाहर श्रीवास्तव